मैथिली रंगमंचक पत्रिका



भंगिमा

मैथिली रंगकर्मकैं समर्पित

वर्ष : 39 अंक : 58 अगस्त 2023



"प्रसन्नता होइया जखन देखय छी जे नाटक भ' रहल अछि। दिन-दिन भंगिमा प्रगति क' रहल अछि।"
...हम त' अहाँ सबहक संग छी हे।

छत्रानन्द सिंह झा

(5 अप्रैल 1946 – 16 सितम्बर 2022)

भंगिमाक संस्थापक सदस्य–प्रथम अध्यक्ष

नेपथ्य के कलाकार – कुशल प्रबंधक

छत्रानन्द सिंह झा 'बटुक भाइ' स्मृति अंक

सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट 21/1860क अंतर्गत निबंधित स्थापित : 4 अगस्त, 1984, निबंधन संख्या : 655/1986

मैथिली रंगमंचक पत्रिका



भंगिमा

मैथिली रंगकर्मकेँ समर्पित

वर्ष : 39 अंक : 58 अगस्त 2023

सम्पादक

आदर्श वैभव

मो. : 9304822501

अवसर

39म वार्षिकोत्सव

प्रकाशन

5-6 अगस्त 2023

आवरण

छत्रानन्द सिंह झाक छायाचित्र

प्रकाशक

भंगिमा, पटना

निबंधित कार्यालय : एल-2/33,पीआईटी कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-800020

पत्रचारक पता : 6, आर्यावर्त कॉलोनी, 4/54-इन्द्रपुरी, पटना-800 024

e-mail : bhangima.patna@gmail.com

website : www.bhangima.in

facebook : https://www.facebook.com/bhangima

मुद्रक

काका कम्पोजर, सरस्वती प्रेस

बोरिंग रोड, पटना : 800 001

मो. : 8002347276, 9304625963





(बायाँ सँ, कुणाल, बटुक भाइ आ उमाकान्त झा)

अत्यन्त हर्ष भ' रहल अछि, जे अपनेक लोकनिक बीच मे छी। एकटा समय छल जहिया आरम्भ केने छलौं भंगिमा। आइ भंगिमा केँ देखि गदगद छी।

हम प्रगतिक कामना करैत छी।

6 अगस्त 2022, 38म वार्षिकोत्सवक अवसर पर

छत्रानन्द सिंह झा

भंगिमा कार्यकारिणी

रंग स्मरण



नबका कलाकार सभमे प्रतिभा छैक।

पीठ पर रहबाक छैक केवल।

कुमार गगन

(1965 - 2021)

सम्पादकीय

पिछला 30 दिसंबर 2021 सँ 30 जुलाई 2023 तक (19 महीना मे) पटनाक रंगमंच पर मैथिली भाषा में 19 नाटकक 21टा मंचन भेल अछि आ जँ सम्पूर्ण भारतवर्ष सहित प्रिय देश नेपाल में मंचित भेल मैथिली नाटकक गणना कएल जाए त' अर्धशतक सँ बेसिए हैत।

एहि समयावधिमे मैथिली भाषा में रंगमंचकेँ ध्वजवाहक नाट्य संस्था 'भंगिमा' - पटना, जनकपुरधाम (नेपाल) आ नई दिल्लीक प्रतिष्ठित नाट्यायोजन संगहि अपन वार्षिक आयोजनमे सशक्त उपस्थितिक संग 7 नाटकक 10टा मंचन सफलतापूर्वक करैत 5 - 6 अगस्त 2023 कें पुनः 'मुक्ति' (हमरा देह पर कोठी खसा दिय') नाटक ल' क' उपस्थित अछि।

एकटा कलाकार रूपें इ बात बहुत उत्साहित करैत विश्वास दिआबैत अछि जे मैथिली रंगमंच एहि डिजिटल युग में निस्सन डेग बढ़बैत रंगमंच पर मैथिली भाषा आ संस्कृति कैँ पल्लवित-पुष्पित स्वर्णिम इतिहास लिख रहल अछि।

... मुदा नाटक करबाक लेल आर्थिक दिक्कत अइछे।

एहि विषय पर आर्थिक रूपें सशक्त नाट्यप्रेमी समाज के सोचबाक चाही आ आगू बढ़ि क' नाट्य संस्था सब के आर्थिक सहयोग द' क' मैथिली भाषा आ संस्कृति के विस्तार में कैटालिस्ट जकाँ भूमिका के निर्वहन करबाक चाही।

भंगिमा अपन पिछला वार्षिकोत्सवमे छत्रनन्द सिंह झा लिखित मूल मैथिली नाटक 'सुनू जानकी' के दू टा मंचन सफलतापूर्वक पटनामे केने छल, हम निर्देशक के भूमिका मे रही।

ओहि आयोजनमे हमरा पहिल बेर भंगिमाक संस्थापक-प्रथम अध्यक्ष छत्रानन्द सिंह झा आ आकाशवाणी के लोकप्रिय कार्यक्रम चौपालक सुप्रसिद्ध पात्र बटुक भाइ जी सँ भेंट भेल, हुनकर आशीष भेटल।

मुदा इ नहि बुझल छल जे ई हुनकर अन्तिम दर्शन हैत, कियाक त' किछिए माह बाद सांस्कृतिक आन्दोलन के पुरोधा देवलोक में बास करय लेल विदा भ' गेलाह।

ओहि दिन देखल हुनकर ओजपूर्ण तेजस्वी चेहरा आ मधुर मुस्की सदिखन हमर स्मृति में रहत।

मैथिली रंगमंचक एहि पत्रिका कें पिछला अंक भंगिमाक पूर्व सारथी, प्रसिद्ध अभिनेता - निर्देशक - नाटककार कुमार गगन आ चर्चित प्रकाश परिकल्पक - नाटककार - निर्देशक मनोज मनुज कें स्मृतिमे प्रकाशित भेल छल आ एही बेरक इ 58वाँ स्मृति अंक उपस्थित अछि नेपथ्यक कलाकार - कुशल प्रबंधक छत्रानन्द सिंह झा 'बटुक भाइ' जीक रंगमंच आ भंगिमा सँ संबंद्ध के परिधिमे किछ संस्मरण, आलेख आ कविताक संग।

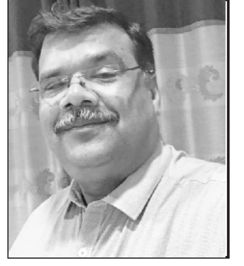
श्रद्धेय बटुक भाइ जी अपन सम्पूर्ण सांस्कृतिक जीवन में समाजक भित्त पर कुशलता आ मधुरता के रंग सँ एतेक रास लिखिया क' विदा भेलथि जे सबटा के एकटा पत्रिका में समेटब कम समयमे संभव नै भ' सकल।

पत्रिकाक ई अंक हुनकर रंग जीवनक एकटा संक्षेप परिचय मात्र अछि।

आदर्श वैभव

30 जुलाई 2023
श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी
विक्रम सम्वत् 2080
पटना

अध्यक्षीय



4 अगस्त 2023 सँ भंगिमा चालीसम वर्ष में प्रवेश क रहल अछि। एहि क्रममे विभिन्न विधाक कलाकार सब जुड़लखिन आ किछ सदस्यध्कलाकार एहि मायाक नगरी सँ चलि गेलाह। भंगिमाक संस्थापक सदस्य आ प्रथम अध्यक्ष छत्रानंद सिंह झा बटुक भायजी एवं संस्थाक पूर्व अध्यक्ष कुमार गगन नहि रहलाह।

जनतव्य छै कि स्थापना दिवस, 4 अगस्त कें अवसर पर दू दिन आ वर्षक अंतिम दिन, 31 दिसंबर कें 'ठहाका'क आयोजन होयत आबि रहल अछि। भंगिमाक इएह निरंतर प्रयास रहैत अछि कि ओ अपन निर्धारित कार्यक्रम कलेंडरक अनुसार पूर्ण करैत रहय।

भंगिमा नित नूतन प्रयोग आ नव सृजन में विश्वास करैत अछि। एहि क्रममें मैथिली रंगमंचमे भायजीक पूर्ण योगदान सँ भंगिमा पटना सहित भारतक विभिन्न राज्य आ नेपाल देशमे अपन सशक्त प्रस्तुति सँ झंडा लहराबैत आयल अछि।

एहि वर्षक वार्षिकोत्सव बटुक भायक स्मृतिमें समर्पित अछि।

एहि वर्ष सँ वर्तमान कार्यकारिणी आ सक्रिय सदस्य सबहक पूर्ण सहमति सँ ई निर्णय लेल गेल अछि कि, प्रत्येक वर्ष वार्षिकोत्सवक अवसर पर छत्रानन्द सिंह झा 'बटुक भाइ' कैं स्मृतिमे 'भंगिमा रत्न' आ कुमार गगन कें स्मृतिमे 'भंगिमा भूषण' सम्मान सँ भंगिमा अपन दू टा कलाकार (वरिष्ठ आ युवा) कें सम्मानित करत। संगहि इहो विचार क' रहल अछि जे, वर्षांत नाट्यायोजन 'ठहाका' के अवसर पर भंगिमा रंगमंचमे अतुलनीय योगदान हेतु प्रत्येक वर्ष भारतवर्षक एकटा रंगकर्मी कें 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' सँ सम्मानित करत।

हम इंटरमीडिएट के पश्चात लगभग प्रत्येक नाटकक रिहर्सल सँ मंच व्यवस्था धरि बटुक भायक छाया बनि संग रहैत छलहुं। मैथिली साहित्यक उत्थान आ नाट्य मंचन सभक लेल बटुक भायजी अग्रसर रहैत छलाह। हुनक सारथी रूपे प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप सँ हम हमेशा संग रही। भाईजीक समर्पण पुरान आ नवतुरिया सभ लोकनिक लेल प्रेरणा अछि। हिनका सन मृदुभाषी कलाप्रेमी संगठनकर्ता बहुत कम होयत अछि।

भंगिमाक अध्यक्षक रूपमें हम हुनके देखाएल मार्ग पर मात्र चलबाक प्रयास क रहल छी। हमर आ भंगिमाक दिस सँ बटुक भाईजीकैं शत-शत नमन।

आचार्य सुरेंद्र
अध्यक्ष, भंगिमा

सचिवक प्रतिवेदन



... अइ तरहें भंगिमा 39 वर्षक भ' गेल।

सबहक जीवनमे अनेको उतार- चढ़ाव आबय छै आ जे मनुष्य सब बाधा, विपदा, परेशानी के पीछा छोड़ैत प्रगतिशील रहैया वएह सफल कहाबैय छै!

...बुझू भंगिमो के सैह कहानी अछि !

4 अगस्त 1984 सँ आई धरि भंगिमा 39 बरखमे अपन अनेको सफलता के लेल अह्लादित अछि।

30-31 दिसंबर 2021 मे द्विदिवसीय कार्यक्रम के आयोजन कुमार गगन एवं मनोज मनुज कें स्मरण करैत विद्यापति भवन, पटना मे सफलतापूर्वक भेल छल जाहि मे दुनू गुणिजन पर आधारित वृत्तचित्र, फोटो प्रदर्शनी, पत्रिकाश्क प्रकाशन, पैनल डिस्कशन के संग दू टा भव्य नाटकक आयोजन कएल गेल छल। कार्यक्रम अंत्यंत सफल रहल। तखन सँ ल' क' अखन तक भंगिमा निरंतर क्रियाशील अछि।

वर्ष 2022मे भंगिमा के शुरूआत अपराजिता, दिल्ली द्वारा आयोजित नाट्य समारोह 'रंगनायिका' में 'बुलबुल आ रखबार' नाटकक माध्यम सँ भेल, जाहि में प्रतिभा मिश्र'क एकल अभिनय एवं निखिल रंजन के निर्देशन रहन्हि। फेर भंगिमा, जनकपुर (नेपाल)मे आयोजित 'साहित्य कला एंव अंतराष्ट्रीय नाट्य महोत्सव 2022' मे कुमार गगन लिखित एवं श्री किशोर केशव'क निर्देशनमे 'शपथग्रहण' नाटकक सफल मंचन केलक। तकरा बाद हम सब चेतना समिति, पटना द्वारा 'सुधाँशु 'शेखर' चौधरी' के स्मृतिमे आयोजित तेसर चेतना रंग उत्सव में 'भारती' कथाक मंचन श्री किशोर केशव के निर्देशन मे केलऊँ। ओकर बाद पिछला 6-7 अगस्त क' क्रमशः विद्यापति भवन एवं पहिल बेर प्रेमचंद रंगशालामे 38म वार्षिकोत्सव श्री क्षत्रानंद सिंह झा 'बटुक भाई' के सम्मानित करैत हुनक प्रसिद्ध नाटक 'सुनू जानकी'क मंचन युवा रंगकर्मी आदर्श वैभव के निर्देशन मे भेल। पुनः एहि नाटकक मंचन नवंबर में राजीव नगर, पटनामे आयोजित विद्यापति पर्व समारोहमे सेहो सफलतापूर्वक भेल। तत्पश्चात 31 दिसंबर 2022 में भंगिमा'क सुप्रसिद्ध आयोजन ''ठहाका'' विद्यापति भवन, पटना मे आयोजित भेल, जाहि मे प्रसिद्ध युवा निर्देशक, अभिनेता श्री सुमित ठाकुर के निर्देशनमे बाल नाटक 'डाकघर' एंव हास्य विनोद सँ सनायल नाटक 'ले बलैया'क मंचन श्री किशोर केशव के निर्देशन मे भेल।

माने भंगिमा, पटना 30 दिसंबर 2021 सँ ल' क' 31 दिसंबर 2022 तक देश - विदेशमे 10टा मैथिली नाटकक मंचन केलक। एहि लेल सब दर्शक, कलाकार, निर्देशक, सहयोगी, सहायक, आर्थिक एवं सामाजिक मदददाता कें धन्यवाद - साधुवाद!

पिछला वार्षिकोत्सव के कनिये दिन बाद हमर सबहक बटुक भाई देवलोक चलि गेलाह। 'सुनू जानकी' नाटक पूरा देखने छलखिन। दुखित रहितो स्टेज पर आबि क' सम्मान ग्रहन केने छलखिन आ खूब आशिर्वाद देने छलखिन।

हम सब अहि बेरक आयोजन हुनके समर्पित करय छियन्ह। पूर्ण विश्वास अछि कि ओ जत' कतौ भी छैथ हमरा सब के अप्पन आशीर्वाद जरूर द' रहल हेताह।

अहि बेरक आयोजनमे हम पहिल बेर निर्देशकक भूमिकामे छी। आशा करय छी जे अपने सब नाटक देखब आ अपन आशीर्वाद सँ हमरा सबके निरंतर जुड़बैत रहब।

भंगिमा अहाँ सब गोटे के अहिबेरक वार्षिकोत्सव मे स्वागत - अभिनंदन करैत अछि।

अंत में अहाँ सब गोटे सँ आग्रह जे, अपन घरक नेना पुता, बच्चा बुच्ची, या अन्य जिनका नाटक करय के लोलुपता, शौक हो हुनका भंगिमा सऽ जरूर जुड़बबियौ!

धन्यवाद।

अंतेश झा

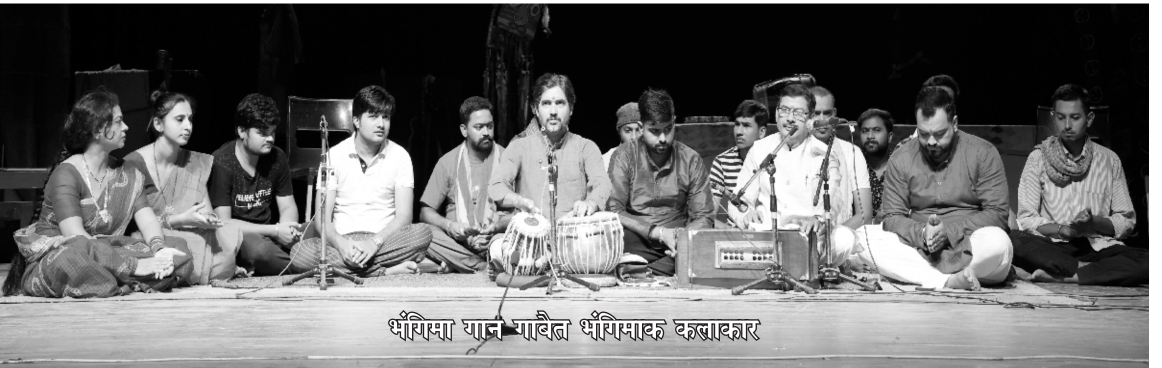
सचिव

छत्रानन्द सिंह झा : संक्षिप्त जीवन-वृत्त

''नाटक मे बहुत भाषण करबाक स्कोप नै छै''

प्रसिद्ध उपनाम	:	बटुक भाइ (आकाशवाणी, पटनाक लोकप्रिय दैनिक कार्यक्रम 'चौपाल'क एकटा स्थायी पात्र)
जन्म	:	5 अप्रैल, 1946
निधन	:	16 सितम्बर, 2022
शिक्षा	:	एमए (मैथिली), मगध विश्वविद्यालय
वृत्ति	:	1968 सँ अप्रैल 2006 धरि आकाशवाणी, पटना मे स्टाफ उद्घोषक आ कम्पीयर
	:	पूर्व सहायक केन्द्र प्रबंधक, ज्ञानवाणी एफ.एम. रेडियो (इग्नू) बिस्कोमान भवन, पश्चिमी गांधी मैदान, पटना
प्रकाशित कृति	:	काँट कूस (व्यंग्य कथा संग्रह), डोकहरक आँहि (व्यंग्य कथा संग्रह), एक गुलाबक लेल (काव्य संग्रह), सीताहरण (नृत्य नाटिका), मैथिली रेडियो नाटक (आलोचना), सुनू जानकी (नाटक)
अनुवाद नाटक	:	अंतिम प्रश्न (मूल : बसंत कानेटकर), गाछ (मूल : लाभ शंकर ठक्कर), रामलीला (मूल : राकेश), नट सम्राट (मूल : बी.बी. शिरवाडकर)
अनुवाद (मोनोग्राफ)	:	कबीर (साहित्य अकादेमी, दिल्ली सँ प्रकाशित)

❐


भंगिमा गान गाबैत भंगिमाक कलाकार

''भंगिमा'' कोनो सामान्य चिड़े नहि, 'फीनिक्स' थिक, जे बेर-बेर अपने छाउरसँ जनमि-जनमि जाइत अछि, जीबि-जीबि उठैत अछि।

भंगिमा पत्रिका, अंक 57, सम्पादकीय सँ

डा. प्रकाश झा
राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
भगवान दास रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 9811774106



शीर्ष रंग शिरोमणि छत्रानंद सिंह झा

अपन मौन मुस्की के पर्दा मे नुकायल आवेग के पोथी रूपी मंच पर खौन्झाइत संवाद स' समाज के झकझोरैत छत्रनन्द सिंह झा जानकी के माध्यमे जखन कहैत छथि - मोन भरि गेल... घर स' निकालि दियौ... मोन भेल त' देह मे सटा लिय', मोन भरि गेल त' लतिया दियौ... की, यैह छै नारीक नियति? तें हमरा जीबाक अछि । नारीक अस्मिताक रक्षाक लेल जानकी के जीबाक छनि। एहन पांति लिखनिहार बटुक भाई उपनाम धारी, मैथिली रंगमंचक सिंह रूपी छत्पति यानी छात्रनंद सिंह झा के कोना कहल जा सकैत अछि मौन धारी? हुनक रचनाक पाठ स' हुनक मोनक मौनक चीत्कार सुनल जा सकैत अछि। जखन आई ओ सशरीर हमरा सबकें बीच नहि छथि तखन त' हुनक रचने के माध्यम स' जानबाक ड्ढयास होयबाक चाही। ओना त' साहित्याकाश मे विचरण करनिहार लेल सशरीर नहि रहब आ रहब बराबरे जेना होइत अछि। ताहू मे रंगमंच त' हरदम वर्तमान होइत अछि, आधुनिक होइत अछि, हरदम युवा होइत अछि । एहि विधा मे पदार्पण करनिहार कहियो मृत्यु लोग नहि जाइत छथि, ओ त' रंगमंचक कलाकार जेना पर्दाक पाछा नेपथ्य मे हरदम तैयार बैसल रहैत छथि अपन नव इंट्री लेल । जखने कोनो काल मे, कोनो नाट्य दल शुरू करत 'सुनू जानकी' त' बटुक भाई सादर ओहि थाम उपस्थित हेबे करताह। नाटककार, रंगकर्मी त' हरदम जीवंत रहैत छथि समक्ष रहैत छथि। तें हमरा सभाहक बीच आदरणीय बटुक भाई साहेब काल्हियो जीबैत छलाह, आइयो जीबैत छथि आ काल्हियो जीबैत रहताह। एहन कर्मशील चनौर गाम निवासी, सन 1946 मे अवतरित आ 2022 मे स्वर्ग गमन करनिहार बटुक भाई हमर सबहक रंग छत्पति बनि रहलाह अछि ।

'भंगिमा' सन निस्सन्न संस्थाक स्थापनाक सूत्रधार, 'भंगिमा' पत्रिकाक प्रबंध संपादक, कतेको नाटक रचनिहार, अभिनेता संग कतेको नाटक आ पोथी लिखनिहार श्री छात्रनंद सिंह झा के रंगमंचीय योगदान पर बेर बेर चर्चा होयब आवश्यक अछि ।

बहुत कम रचनाकार एहन छथि जे कोनो स्थापित मिथक संग नव सर्जन क' पबैत छथि । मुदा, श्री छात्रानंद सिंह झा जखन अपन नाटक 'सुनू जानकी' लिखैत छथि, तखन ओ मिथक रूपी जानकी आ वर्तमान परिप्रेक्ष मे उपस्थित जानकीक मध्य तुलना करैत छथि। वर्तमान सामाजिक परिवेश मे एखनो जानकीक स्थति मे कोनो विशेष परिवर्तन नहि आयल अछि तकरा अपन नाटक मे नीक जेना देखार केलाह अछि। अपन नाटक 'सुनू जानकी' मे मात्र जानकीक

...नाटक लेल बहुत संख्याक आवश्यकता नहि छैक। एकरा बहुत सोचि विचारि क' बहुत नीक जेना करबाक चाही । कारन की आइ काल्हि भ' गेलैए जे मंचपर रहनिहार मात्र थिएटर करै छै। ओना ई प्रसन्नताक बात छै जे अभिनेता अभिनेत्री के त' सब देखैत छै, सब चिन्हैत छै, बाह बाही दैत छै, मुदा एकटा कार्यकर्ता के से कियो नोटिस क' रहल छै जे मंच पर जे किछु भ' रहलैए ओकर पाछू सेहो बहुत लोक लागल छै, कोनो कार्यकर्ता सम्हारि रहल छै ओ नेपथ्ये मे रहि जाइत छै। जा धरि अहाँ कार्यकर्ता के सम्मान नहि देबै त' ओ मजबूती नहि आओत। ओ थैंकलेस जॉब छै मुदा बहुत महत्वपूर्ण जॉब छै।

... अहाँ लोकनि नाटक करू, खूब करू, सोचि क' करू जे अहाँ नाटक किएक क' रहल छी, एहि बातक ध्यान अवश्य राखब । धन्यवाद...

- बटुक भाई, (ज्योतिरीश्वर रंग शीर्ष सम्मान ग्रहण करबा काल)





नाटक ''सुनू जानकी'' के एकटा दृश्य

परिवर्तित रूप टा नहि, वर्तमान राम के सेहो कथाधारा मे अनने छथि बटुक भाई। हिनक नाटक मात्र मंचे टा लेल नहि छनि, रचनाक मूल सामाजिक दायित्व संग रचल गेल छनि।

रंगमंच के प्रति हुनक लगाव के हुनके पांति स' अकानल जा सकैत अछि ' जखन ओ ज्योतिरीश्वर रंग शीर्ष सम्मान ग्रहण करबा काल सूक्ष्म वक्तव्य देलाह- ''उपस्थित बुद्धिजीवी लोकनि, आई अत्यंत प्रसन्नता भ' रहल अछि जे सामान्यसन रंगमंचक कार्यकर्ता के सेहो सम्मान योग्य बूझल गेल। तदर्थ सबके धन्यवाद दैत छियनि, आभार प्रगट करैत छियनि। सत्य पूछल जाय त' नाटकक विकास लेल आवश्यक छैक जे ओहि मे निरंतरता बनल रहय आ निरंतरता लेल आवश्यक छै जे एकटा खूब मजबूत संगठन हुए। आइ स' 26 वर्ष पूर्व 1988 मे अही दिल्ली मे अंतर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य समारोह आयोजित भेल छल। हम ओकर क०डिनेटर छलहुँ। मावलंकर ह०ल आ प्यारेलाल भवन मे आयोजन भेल छल जाहि मे देशक संग संग नेपालक कएकटा संस्था अपन नाटक ल' क' आयल छल। पटना मे, विराटनगर मे एहि तरहक आयोजन होइत रहल । एहि सँ स्थानीय अभिनेता लोकनि अभरलाह। हमर शुरुए स' एहि बातक जोर रहल जे एकटा मजबूत संगठन होबाक चाही। आ यैह कारण रहल जे हम पिछला 21 वर्ष धरि भंगिमा पटना मे समान्य कार्यकर्ता बनि अध्यक्ष रहलहुँ । बाद मे आकाशवाणी स' सेवानिवृति के बाद हम एहि स' फराक भ' गेलहुँ । कहबाक अभिप्राय ई जे नाटक लेल बहुत संख्याक आवश्यकता नहि छैक। एकरा बहुत सोचि विचारि क' बहुत नीक जेना करबाक चाही। कारन की आइ काल्हि भ' गेलैए जे मंचपर रहनिहार मात्र थिएटर करै छै। ओना ई प्रसन्नताक बात छै जे अभिनेता अभिनेत्री के त' सब देखैत छै, सब चिन्हैत छै, बाह बाही दैत छै, मुदा एकटा कार्यकर्ता के सेहो कियो नोटिस क' रहल छै जे मंच पर जे किछु भ' रहलैए ओकर पाछू सेहो बहुत लोक लागल छै, कोनो कार्यकर्ता सम्हारि रहल छै ओ नेपथ्ये मे रहि जाइत छै। जा धरि अहाँ कार्यकर्ता के सम्मान नहि देबै त' ओ मजबूती नहि आओत। ओ थैंकलेस जॉब छै मुदा बहुत महत्वपूर्ण जॉब छै। ... अहाँ लोकनि नाटक करू, खूब करू, सोचि क' करू जे अहाँ नाटक किएक क' रहल छी, एहि बातक ध्यान अवश्य राखब । धन्यवाद...

जखने कोनो काल मे, कोनो नाट्य दल शुरू करत 'सुनू जानकी' त' बटुक भाई सादर ओहि ठाम उपस्थित हेबे करताह।

एखन एतबहि... जल्दीए हिनक सब रचना पर विस्तार स' चर्च करब... अस्तु ....



पूनम श्री
वरिष्ठ अभिनेत्री



मैथिलिक स्तम्भ

बरगद सन विशाल ह्रदय
ओहि पर स्नेहक चढैत बेल
हुलसि हुलसि सभक बढ़बैत डेग
रोशन छल स्वर सँ मंच रेडिओक बेस,
संयम साहस विश्वास छल पिता समान।
मुसकी पसरल रहनि ठोरक ठाम
आउ गाबी हिनकर गान
जीवन जिनकर स्वर लहरि समान
उलझनक करैथ चुटकी मे समाधान
छत्रानन्द छल जिनकर नाम।

स्नेहक छतरी आ आनंदक
बेजोड़ मिलन
कंठक सिंहासन अहाँक गाम
जिनकर अद्भुत व्यक्तित्व
व्यवहार बटुक भाय जिनक अनमोल

एकटा एहन सम्पूर्ण व्यक्तित्व के नाम जे प्रत्येक व्यक्ति बच्चा-बच्चाक ह्रदय मे बसल छथि बटुक भाय।

जीवनक दुनू कछार रेडिओ मंच संगहि साहित्य के समानांतर चलेबाक प्रवीणता आ बीच परिवार के संग ठाढ रहय वला लोक। बटुक भाय साहित्यकार व्यंग्यकार टिप्पणीकर नाटककर तँ छलाहे ताहि पर व्यापक प्रतिबिम्ब व्यक्तित्व मे सेहो छल.. 1984 भंगिमाक नाट्य संस्थाक अध्यक्ष रुपे महत्वपूर्ण योगदान छल जाहि मे हमहूँ ओकरा आँगनक बारहमासा नाटकक मंचन केने रही आ अनवरत कतेको नाटक केलहूँ!भाईजीक छत्रछाया मे नहु नहु मैथिली बजनाय सिखलहुँ, भाईजी डेग डेग पर प्रोत्साहित केयलनि.. छोट छलहूँ दसम पास कएलाक बाद पटना कॉलेज मे दाखिला लेलहूँ तखन बटुक भाय कहला मैथिली एकटा विषय जरूर लेब गे दाय!

हुनकर गे दाय कहब मे जे आपकता छल से मोन पड़ैत नोरा जायत छी।

आकाशवाणी मे सेहो मैथिली नाटकक परीक्षा उत्तीर्ण केला के बाद अनेकानेक नाटक भाय जीक संग केलहूँ। अनगिनत चिट्ठी पत्री कार्यक्रम

बटुक भाय साहित्यकार व्यंग्यकार टिप्पणीकार नाटककार तँ छलाहे ताहि पर व्यापक प्रतिबिम्ब व्यक्तित्व मे सेहो छल..

❒



छत्रानन्द सिंह झाक संग पूनम श्री

सेहो संग कयलहूँ।

मधुर मृदुभाषी वरीय उद्घोषक संग मंचक संचालन सेहो भाई जी करैत छलाह ..आवाजक जादूगर बटुक भाय कतेको नव तुरिया क प्रेरणा स्रोत छथि।

हमर सेहो।

विद्यापतिक समारोह हो वा मैथिली क उत्थानक लेल आंदोलन सभ में आगू, अपन कंठक मधुरता संगे सभक बीच भनहि भौतिक रुपे उपस्थित नै छथि मुदा रेडिओक रिकॉर्ड प्लयेर पर युगान्तर धरि हिनक आवाज गुंजइत रहत..

अहाँ छी प्रतिबद्ध कवि
उद्घोषक साहित्यकार
सभक अभिव्यक्तिक अनुभूति
दर्शकक श्रोताक प्रथम दृष्टया
अहाँ छी हमर सभक बटुक भाय।
नमन करैत छी महाशून्य कैँ
जत उपस्थिति अहाँक दर्ज अछि
अहाँ रहब बीच जीवनक यथार्थ बनि।

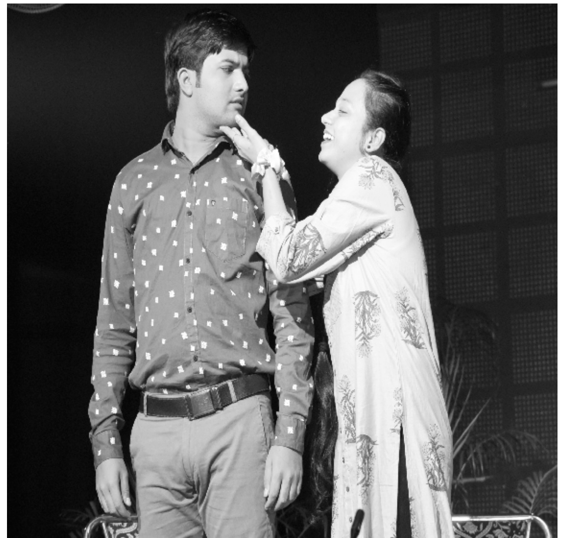


''बटुक भाइ कैँ एहन नै रहनि जे सब सँ सैद्धांतिक सहमतिये रहनि, बहुत गोटे सँ बहुत बेर सैद्धांतिक विरोधो रहनि हुनका।

...

एकटा बड़का क्वालिटी ई महामानव कैँ रहनि जे विरोध अपना जगह पर अछि, मुदा अपन जे अत्मीयता अछि से हुनका संग रहबे करत।''

स्मरणाँजलि सँ....



नाटक ''शपथग्रहण'' के एकटा दृश्य मे बैजू झा आ रूचि रानी

कमल मोहन चुन्नू
सहरसा
मो.9334924753



एकटा अजातशत्रु रंगचिन्तक

भंगिमा (पटना) क सम्पादकक आग्रह पर एक बेर पुनः हम बटुक भाइ केँ मोन पाड़य बैसल छी। यद्यपि ओ तेहेन लोक छलाह जे हुनका विसरल नही छी। हुनका विसराले नहि जा सकैत अछि। मुदा एखन हम हुनका पर किछ लिखबाक लेल हुनका मोन पाड़ि रहल छी। एकहि संग मारिते रास घटना आ मारिते रास बात सभ मोन पड़ि रहल अछि। यद्यपि हम कोनहु आन 'भंगिमाइ' जकाँ हुनक बहुत संग नहि कयने छी। मुदा बेसी नहि तँ ततेक कमो नहि संग छल। विभिन्न नाटक आकि कोनहु साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजन मे भेंट होथि। उल्लेखनीय बात ईहो अछि जे कमो कालक भेंट-घाँट मे किछु ने किछु तेहेन गूढ़ बात अथवा उपयोगी बात अवश्य कहथि, जे एकटा अभिभावक केँ कहबाक चाही। पटनाक साहित्यिक-सांस्कृतिक परिसर एहि बात ल' क' आइयो प्रशंसा पबैत अछि जे एतय सदति एकटा साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिभावक लोकनिक समूह रहल अछि जे अपन उत्तरपीढ़ीक लोक केँ उचित आ आवश्यक बात सभ कहैत रहल छथि। ओ लोकनि एहि बात सँ निर्पेक्ष रहैत छथि जे ई बात सभ सुननाहर केँ अत्रिय सेहो लागि सकैत छैक। मुदा ई भोगल तथ्य अछि जे तत्काल हिनका लोकनि द्वारा कहल 'अप्रिय बात', बाद मे जीवनोपयोगी। ...होइत रहल अछि।

ई बात लगभग तीस वर्ष पुरान अछि। प्रायः 1988-89क। तहिया एकटा रंगकर्मी होइत छलाह मनोज प्रतिहस्त। ओ हमर भागिन मुदा सम्वयस्की। हम पटना आवि गेल छलहुँ। हुनके प्रेरणा आ प्रयास पर हम एतहुक मैथिली नाटकक मादे सुनने रही। किछुए दिन बाद 'काठक लोक' (1989) (1) मंचित भेल छल। भंगिमाक पहिल बेर हम यैह नाटक देखने रही आ हमर गाम-घरक नाटकक प्रति मुग्ध-भाव एतहि सँ खंडित होयब शुरू भेल छल। (2) तहिया अरिपन (पटना) क नाट्य महोत्सव वर्सेज 'काठक लोक' बला दुर्घटना घाटे चुकल छल आ भंगिमा तखन एहि नाटकक अखंडित मंचन कयने छल। तकर बाद तँ भंगिमाक क एकटा नाटक पाँच पत्र (1989), उपनयनक भोज (1989) (3) कुत्ता (1990) (4) आरि नाटक सभ देखि चुकल रही। एखन धरि हमर नाट्य-सम्पर्क मात्र दर्शक दीर्धा धरि छल। एहि क्रम मे हम बटुक भाइ केँ मंच पर अवैत आ बजैत कएक बेन देखने सुनने छलहुँ मुदा चिन्हैत नहि एहीयनि। एक दिन अपन भागिनेक संग विद्यापति भवन आयल छलहुँ। तहिया भंगिमा 'रूक्मिणी हरण' (1990) क रिहसेल मे लागल छल। विद्यापति भवनक 'सलेहस कक्ष' मे रिहर्सल भ' रहल छल। ओहि रिहर्सल मे हम बटुक भाइ केँ पहिल बेर अभिनय करैत आ पहिल बेर एतेक लग सँ देखने छलहुँ आ भगिनेक चिन्हओला पर चिन्हने रहियनि जे यैह बटुक भाइ छथि। तखन हमरा एकाएक हिनक आवाज आ रेडियोक चौपाल कार्यक्रमक आवाज मिलि गेल आ हमर हर्षक ठेकान नहि रहल छल। मैथिलीक एहि 'लीजेन्ड' व्यक्तित्व केँ एतेक लग सँ देखबाक हर्षक वर्णन असम्भव छल। तहियाक 'रिहर्सल' अपना मे एकटा

...ई बहुत आवश्यक छैक जे अहौंक अग्रज पीढ़ी अपन अनुज पीढ़ी पर विश्वास करय, अनुज पीढ़ी जावत ई विश्वास हासिल करैत अछि तखने अपन पूर्व पीढ़ीक बात-विचार अपन उत्तर पीढ़ी मे हस्तांतरित होइत छैक। तखने एकटा समर्थ आ समुचित परम्पराक निर्माण आ निर्वाह सम्भव होइत छैक।



'थियेट्रिकल वर्कशॉप' जकाँ होइत छल। एहि माध्यमे एकहि ठाम मारिते रास रंगमंचीय बाल-लीला सम्भव भ' जाइत छलैक। 8-10 दिन गेल रही हम ओहि रिहर्सल केँ देखय। एहि क्रम मे जे आन प्रकारक ज्ञान-लाभ भेल अथवा रंगकर्म मे विशेष रूचि जागल से फराक बात, मुदा एहि क्रम मे बटुक भाइक जे मान-सम्मान देखलियनि, हुनक जे बात-विचार देखलियनि, हुनक जे सविनय प्रबन्धक देखलियनि ताहि सँ हम स्वयमेल हुनका प्रति नतशिर भ' गेल छलहुँ। लकर बाद तँ हम पटना मे मंचित मैथिली नाटकक नियमित दर्शक बनि गेल छलहुँ। एहि बीच हम किछु वरेण्य नाटककार लोकनिक नाटको पढ़ि लेने छलहुँ जाहि मे महेन्द्र मलंगिया, सुधांशं 'शेखर' चौधरी लोकनि प्रमुख छलाह। किछुए दिन बाद भंगिमा 'पहिल साँझ (1994) क मंचन कयलक एहि सँ पूर्व ई नाटक कतय मंचन भेल छल से नहि कहि, मुदा हम ई नाटक पुस्तकाकार रूप मे पढ़ि चुकल छलहुँ। 'जेनेरेशन गैप' विषय पर ई अद्‌भुत नाटक छल जकरा नाटककार सुधांशु 'शेखर' चौधरी बेस दायित्वपूर्वक लिखने छलाह। ओहि मे एकटा प्रमुख पात्र छल 'रमाकांत' जे नायकक पिता छल, गाम मे रहैत छल, गमैया विचार सभ सँ ओत-प्रोत रहैत छल जाहि मे गाम मे जमीन की नब आ ताहि माध्यम मे अपन प्रतिष्ठा केँ व्यक्त करब अपन शान बुझैत छल। एकरहि भूमिका मे छलाह बटुक भाइ। मुदा एहि नाटकक बेटा 'उदयकांत' अपन पिताक विचार सँ सर्वथा विपरीत छलं एहि नाटक मे बटुक भाईक संग प्रेमलताजी (रमाकान्तक पत्नी) मनीष अरविन्द (उदयकांत) लोकनि सेहो छलाह। (6) नाटक देखि क' लागल जे रमाकांतक चरित्र मे अऽ रमाकांतक भूमिका मे कोनो फाँक नहि छैक। जैह नाटककार लिखने छलाह सैह बटुक भाइ प्रस्तुतो कयल।

एहेन एकभगाह पिता, अपन जिद पर अड़ल पिता, अपने निर्णय पर कठोरता सँ अमल करयबला पिता छलाह बटुक भाइ। विद्यापति भवनक दर्शक दीर्धा मे बैसल प्रत्येक दर्शक केँ अपन-अपन गामक आ अपना गाम मे रचल-बसल एहेन पात्र मोन पड़ि गेल छलैक। नाटकक अंत मे जीवन बटुक भाई (रमाकांत) प्रेमलता जी (रमाकांतक पत्नी) सँ झटका मारि के झोटी लैत छथि (7) आ शून्याकाश मे तकैत अपन संवाद कहैत छथि- ''पहिल साँझ, दोसर साँझ, राति... अन्हार राति। जा धरि ई राति रहत, स्वार्थक चमगदड़ी फरफराइत रहत, चकमाउर दैत रहत... फल्लाँ चललाह।'' तँ समूचा दर्शक दीर्धा हतप्रय भेल निःशब्द छल। ककरो थपड़ी बजबय जोग नहि रहय देने छलाह बटुक भाई आ सुधांशु 'शेखर' चौधरी। हमरो एहि बातक सतथ्य प्रमाण भेटि चुकल छल जे नाटकक अपन समाज आ सामाजिक केँ कतेक गहीर धरि जा क' छेदि सकैए, बेधि सकैए! ताहि खन जे एकटा हारल पिता मुदा अपन हारि स्वीकार नहि करयबला पिता, बेटाक कृत्य सँ बेधायल पिता, एहि काल अपन पत्नीओ केँ बेटेक पक्ष मे ढाढ़ देखि नितांत एसकर ओ पति आ ओ पिता रमाकांत, बटुक भाइक अभिनय मे ततेक ने साकार भ' गेल छल जे दर्शक दीर्घाक आ मंचस्थ कथ्यक दूरी सर्वथा समाप्त भेल सन लागि रहल छलैक। लगैत छलैक जे सभक सोझा ओ रमाकांत उपस्थित भँ गेल अछि। हमरा लगैए जे बटुक भाइ पुनः एतेक सक्कत आ प्रभावकारी भूमिका पुनः दोसर बेर नहि क' सकलाह। सीताहरण (1985) प्रायश्चित आकि सुनू जानकी (2002), चाही एकटा शिवसिंह (2003) मे जहिना बटुक भाईक मौलिक नाटककार रूप भकरार छल तहिना गाछ (1985), रामलीला (1992), आदर्श कुटुम्ब (1990), नट सम्राट (1981) संयोग (1992), मिले धौंछ मे धोंछ (1995), हीरक जयंती (2000), आदि नाटक मे हिनक अनुवादक नाटककारक रूप सँ मैथिलीक रंगमंच परिचित भेल। (8) तहिना जखन हिनक पोथी 'मैथिली रेडियो नाटकः उद्‌भव ओ विकास' (2003) आयल तँ हिनक आलोचक, रंगचिन्तक आ नाट्य-गवेषक, शोधप्रज्ञ आदि रूप सगर साहित्यिक आ रंगमंचीय समाज देखलक। तहिना हिनक गीत गजल-संग्रह 'एक गुलाबक लेल' हिनक सुघड़ कवि रूप मे हिनका स्थापित कायने रहल। 'डोकहरक आँखि' (1971) आ काँट कूस (1977) हिनक व्यंग्य-लेखन आ कथा लेखनक सामर्थ्य आ सिद्रहस्तता के ँ अख्यासलक। 'एक गुलाबक लेल' पोथीक संग जे घटना-घटल छल से बंटुक भाई स्वयं हमरा सांध्य-गोष्ठीक आयोजन सँ धरती काल बाट मे कहने छलाह। ई गपशाप प्रायः 2007 ई.क कोनहु 'सान्ध्य गोष्ठीक आयोजनक अछि। तहिया हम संजयनगर, कंकड़बाग मे रहैत रही। आ बटुक भाई कंकड़वागक सरकारी आवास मे रहैत छलाह। सेवानिवृत्त तँ भ' गेल छलाह मुदा प्रायः इग्नू सँ सम्पर्कित भ' गेल छलाह। घुरतीकाल हुनका संग पयरे-पयरे हम संग छलियनि। ताहिए मे 'एक गुलाबक लेल' प्रकरणक

उद्घाटन कयल। ई गप तहियाक कहि रहल छलाह जहिया राजीव गांधी प्रधानमंत्री छलाह। तहिया आकाशवणी 'चौपाल' कार्यक्रम लाइव होइत छल, अर्थात सोझे प्रसारित होइत छल। ओहि दिन चौपाल-मण्डली पटनाक दक्षिण, गया दिस कतहु पहुँचल छल। ई कार्यक्रम ओतहि सँ प्रसारित भ' रहल छल। प्रसारण कोनो चौक-चौवटिया अथवा गामक चौगेन स्थान सँ भ' रहल छल। प्रसारणक बीचहि मे कोनहु कात सँ एकटा बच्चा राजीव गॉधीक प्रति मुर्दाबादक नारा लगा देलकै। कार्यक्रम लाइव चलि रहल छल तेँ ईहो नारा प्रसारित भ' गेलै। तकर बाद तँ बुझू जे प्रसारण जगत मे तँ हरबिरो मचि गेल। बटुक भाइक कोनो प्रकारक गलती नहिओ रहैत हुनका सस्पेंड क' देल गेल। एहि क्रम मे हुनका तीन-चारि मास घर बैसय पड़लनि। ओही क्रम मे बटुक भाइ मारिते रास गजल आ गीत सभक रचना कयल जे बाद मे पुस्तकाकार सेहो प्रकाशित भेल। एहि 'सस्पेन्सन' सँ हिनका जे आर्थिक-मानसिक दुख-तकलीफ भेल होनि मुदा ई अवधि हिनका एकटा सजग कवि, प्रगतिकामी कवि, एकटा प्रतिबद्ध कवि आ एकटा मुखर कवि रूप मे सेहो सृजित कयलक यद्यपि एकरहि समानान्तर हिनक आलेख आ सम्पादकीय लेख सभ मे सेहो हिनक सजगता प्रतिवद्धता आ प्रगतिकामना सँ भरल रहैत छल।

जेना-जेना हमर साहित्यिक आ रंगमंचीय अभिरूचि बढ़ैत गेल तेना-तेना एतहुक अरिपन, भंगिमा, चेतना समिति अादि संस्था संग आपकता बढ़ल। एकर आयोजन आ विचार-विमर्श मे जाय लगल हुँ। ताही क्रम मे भंगिमाक बैसार मे आकि समीक्षा-गोष्ठी मे सेहो जाइ। एहि गोष्ठी सभ मे बटुक भाइक सांगठनिक क्षमता, दक्षता आ संतुलनक अख्यास होइत छल। वर्ष 2008 धरि 'भंगिमा' अपन दूदिना वार्षिकोत्सव मे दोसर दिन एकटा समीक्षा-गोष्ठी सेहो रखतै छल। आनक बात तँ ठीक-ठीक नहि कहि सकब मुदा हमरा नाटक बुझबा आ परेखा मे ई गोष्ठी महत्वपूर्ण सिद्ध भेल अछि। कएक बेर एक ठाम सांस्कृतिक कार्यक्रमक संचालन मे सेहो बटुक भाईक वक्तृता, वाक्पटुता सभंजन क्षमता, दर्शकक मूड केँ बुझबाक नैसर्गिक गुण, भविष्यजीवी दृष्टि आरि विराट काय परिचय भेटैत रहल। धीरे-धीरे हिनका सँ जखन कनेक सामीप्य बढ़ल तखन हिनका सँ वैचारिक गपशप सेहो भेल करय। नाटक पर लिखबाक लेल नाटकक आलोचना करबाक लेल ओ सदंति प्रेरित करथि। वर्ष 2001 मे चेतना समितिक विद्यापति स्मृतिपर्वक अवसर पर हमर नाटक 'नव घर उठे' मंचित भेल छल। एकरा बटुक भाई देखने छलाह। दु-चारि दिन बाद जे भेटलाह तँ एकर 'क्लाइमेक्स' क मादे अपन असहमति प्रकट कयने छलाह। एकरहि संग ओ एकटा समाधान सेहो देने छलाह। हम तत्काल अपन मंचनक मुग्धता सँ बहार नहि भेल रही तेँ हिनक सुझाओ नहि रूचल। मुदा एकाध मास बाद जखन मुग्धता टूटल तँ हिनके क्लाइमेक्स हमर बेसी उचित लागल। नाटकक प्रकाशित होयबा काल हम हिनके कहल क्लाइमेक्स केँ सभावेश कयल।

विद्यापति भवन मे प्रायः चाही एकटा शिवसिंह (2003) क समीक्षा-गोष्ठीक उपरांत ओ हमरा वक्तव्य सँ प्रभावित भेल रहथि आ कहने रहथि जे जखन जीवन सुव्यवस्थित भ' जाय तँ एहि हर्षिक विकास करी। एही क्रम मे ओ हमर पढ़ाइ-लिखाई आ जीवन-संघर्षक हिसाव-किताब सेहो पुछने रहथि। ताही क्रम के ओ कहलनि जे पहिले जी जाँति क' कतहु नौकरी-चाकरी ल' ली, तखन वेसी निश्चितंता सँ रंगकर्मक उन्नयन लेल काज करब। ताही क्रम मे ओ अपनो पढ़ाइक गपशप कहलनि। तखने हम बुझलहुँ जे ओ अंग्रजीक छात्र रहथि मुदा एम.ए. मैथिली सँ कयल। हुनक शिक्षक रहथिन।

आदरणीय बामुकी बाबू। आजन्म हुनका प्रति गुरूभाव आ तद्जन्य सम्मान-मान रखने रहलाहं 2007 के गप अछि। हम मैथिली मंचक उद्घोषणा परम्परा पर एकटा आलेख लिखि रहल छलहुँ। ताहि क्रम मे मारिते रास अपरिमित नाम सेहो कहलनि संगहि हुनक सांगोपांग परिचय सेहो कहलनि। मारिते रास रोचक कथा सभ सेहो कहलनि। ताही क्रम मे मायाबाबूक एकटा खिस्सा कहलनि। कहलनि जे कतेको ठाम एहन भेलनि जे मायाबाबू मंचक उद्घाटन सत्रक संचालन करथि आ तकर वाद दिनका मंचक भार थम्हा देथि ई कहबो कराथि जे ''नेता आ मंत्री-संतरी लग अहाँ छलहुँ आ आब गवैया-बजबैया अयल झंझटि बेर मे हमरा थम्हबैत छी।'' ताहि पर मायाबाबू कहथिन जे कनेक काल अहाँ संचालन सम्हारू, हम लधुशंका सँ आबि जाइत छी।'' बटुक भाइ कहलनि जे आए धरि ओ लधुशंका सँ धूरि क' अबिते रहलाह भरि राति हमरा मंच सम्हारय पड़ल। बटुक भाइ कह ल' ई

चाहथि जे ई बहुत आवश्यक छैक जे अहौंक अग्रज पीढ़ी अपन अनुज पीढ़ी पर विश्वास करय, अनुज पीढ़ी जावत ई विश्वास हासिल करैत अछि तखने अपन पूर्व पीढ़ीक बात-विचार अपन उत्तर पीढ़ी मे हस्तांतरित होइत छैक। तखने एकटा समर्थ आ समुचित परम्पराक निर्माण आ निर्वाह सम्भव होइत छैक।

वर्ष 2014 क गप अछि। ज्योतिरीश्वर रंगशीर्ष सम्मान लेल प्रक्रिया प्रारम्भ भ' गेल छल। ओहि सम्मान मैलोरंग, दिल्ली द्वारा देल जाइत छल। से आइयो देल जाइत अछि। ओहि बेर पुनः हम एहि सम्मान समिति मे प्रभावकारी भूमिका मे रहीं त' एकटा नाम विचारणीय बनल मुदा हम बटुक भाइ पर स्थिर रही। अन्यो निर्णायक लोकनि हमर प्रस्ताव केँ मानलाह आ सर्वसम्मति सँ हिनक नाम निर्मीत भेल। प्रकाशजी (महासचिव मैलोरंग, नई दिल्ली) केँ तकर सूचना द' देलियानि। प्रकाशजी जखन बटुक भाइ केँ एहि सम्मानक मारे सूचित कयल तँ बटुक भाई केँ सुखद आश्चर्य भेल छलनि। ताधरि हुनका एहि सम्मानक प्रक्रिया आ निर्णायक लोकनिक भारे किछुआ नहि बुझल छलनि। मैलोरंग अपन परम्पराक अनुसार, एकटा विराट कार्यक्रम क' क', एकटा नाटकक प्रस्तुति क'क' बटुक भाई केँ ई सम्मान प्रदान कयलकनि। पटना मे लिटरेचर फेस्टिवल (दोसर) चलि रहल छल। तेँ हम नहि जा सकल छलहुँ। जखन सम्मान प्राप्त क'क' बटुक भाई घुरलाह तकर दुइये-तीन दिन बाद विद्यापति भवन मे हमरा भेटलाह। ओतय चेतना समिति मारिते रास पदाधिकारी सभ सेहो रहथि। तहिया हमहूँ घर-बाहर' पत्रिकाक सम्पादन सँ जुड़ल छलहुँ। सभक सोझाँ मे बटुक भाई हमर गुप्त निर्णयक आतदजन्य धैर्य-संयमक प्रशंसा कयलनि। एकर संगहि एकटा आओरो गप कहलनि जे भाई हम एकरा प्रथमतः उद्घाटित करैत गहवरित भ' रहल छीं ओ कहलनि जे- ''चुन्नूजी, हम कहियो कोनो उपकार अहाँक नहि कयने छी। एकाध बेर रेडियो मे सेहो अहाँ भेंट कयने रही मुदा नैहिजनि किएक हम अहाँ केँ ने कोनो काज आबि सकलहुँ आ ने अही सँ कोनो काज ल' सकल हुँ। मुदा तैयो अहाँ, हमरा सन निक्रिय आ नेपथ्य मे पड़ल लोकक अतीत मे कयल रंगमचीय काज केँ एना मोन पाड़लहुँ जे मैथिली रंगमंचक सर्वश्रेष्ठ सम्मान हमरा देलहुँ, हम बहुत अभिभूत श्री। हमरा लग शब्द नहि अछि जे हम कोन शब्द मे आभार कही आ कोन शब्द मे आशीर्वाद दी। एहि दृष्टि केँ आ एहि धैर्य-सैयमादि केँ बचा क' राखबा'' बटुक भाईक एहि गपशप सँ हम गलल जाइत रही मुदा कतहु ने कतहु अपना कयल निर्णयक प्रति-मूल्यांकन सुनि हर्ष सेहो भ' रहल छल। भरल लोक मे बटुक भाई ईहो कहलनि जे मैलोरंग अपन अतिथिक आतिथ्य करब जनैत अछि। एतहुक (पटना) संस्था सभ जकाँ नहि जे कि सम्मान द'क' उपकार घसैत रहैत अछि।

> **''नाटक करैत छी तँ करू मुदा पढ़ाइ-लिखाइक शर्त्त पर नहि, पढ़ाइ-लिखाइ केँ कात क'क' नहि।''**

मैलोरंग सँ एहि संस्था सभ केँ ई सिखबाक चाही जे अपन सम्मानित-पुरस्कृत अतिथिक स्वागत सत्कार कोना करय।

वर्ष 2016 मे हम सहरसा नौकरी करबाक लेल अयलहुँ। हुनक कहल 'जीवन तँ व्यवास्थित' भेल मुदा पटनाक साहित्यिक-सांस्कृतिक सक्रियता स्वभाविक रूप सँ कम भ' गेल। वर्ष 2017 मे हमर नाटयालोचनाक पोथी 'निनाद' प्रकाशित भेल। दिसम्बर 'ठहाकाक अवसर पर हुनका ई पोथी देलियनि। 2-4 दिन बाद ओ कोनहु दिन विद्यापति भवनक लग भेटलाह चाहक दोकान पर ल' गेलाह। ओतय विनोद कुमार झा (सरकार) सेहो रहथि। बटुके भाइक सौजन्य सँ चाहो चलल। हुनक पत्नीक देहांत भ' गेल छलनि। तें गपेशप करैत-करैत भावुक भ' जाइत छलाह, भाव-विहवल भ' जाइत छलाह। तथापि ओ 'निनाद' पर अपन पाठकीय टिप्पणी देलनि, हमर जोश आ सोचकेँ प्रोत्साहित कयलनि। हुनक टिप्पणी तते ठेकानल आ समधानल छल जे हम अचम्भित रही। आधुनिक मैथिली रंगमंचक क्रम मे जे हमर स्थापना छल जे एकर प्रारम्भ 'सुन्दर संयोग (कविवर जीवन झा) सँ नहि मानल जाय ताहि सँ ओ सहमत छलाह। मुदा ओ हमरा सँ प्रति प्रश्न कयल जे तखन एकर प्रारम्भ हम कतय सँ मानैत छी, कोन नाटक सँ मानैत छी? बसात (पं. गोविन्द झा) सँ? मुदा हम एतय हुनका सँ असहमत भ' जाइत रहीं ताही क्रम मे हम कहलियनि जे हमरा हिसाबे आधुनिक मैथिली नाटकक प्रारम्भ मिथिला नाटक' (मुशी रधुनन्दन दास 1923) सँ होइत अछि। बटुक भाई कहने रहथि जे ओ ओना नहि मानताह। एकटा सतथ्य सप्रमाण आलेख चाही जाहि मे

एकर निजगुत व्याख्या वर्णित हो। हम बटुक भाई सँ सहमत भेल रही आ हुनक एहि इच्छा कैँ तहिया आदेशो मानने रही।

सहरसा अयला पर शनिये-रवि क' पटना घूरी। तेँ एतहुक कार्यक्रम सभ सँ छूटब स्वाभाविक छल। सांध्य-गोष्ठी' (प्रेमलताजीक आवास पर आयोजित मासिक साहित्यिक-सांस्कृतिक गोष्ठी) सँ सेहो नियमितता भंग भ' गेल। मुदा बटुक भाई यदा-कदा भेटिए जाथि कएक रंगक गपशप कहथि। 'भंगिमा' क प्रगति सँ हर्षित सेहो होथि आ ओकर आंतरिक कलह आ पद-पदार्थजन्य उठापटक सँ चिन्तित-सीदित सेहो होथि। जाहि 'भंगिमा वटवृक्ष' केँ ओ रोपलनि, थलियौलनि, पटौलनि, ताही वृक्ष मे थोड़ेक काँट जनमि गेल छलैक।

क एक बेर ई काँट हुनको हाथ-देह सभ मे भौंकायल छलनि। मुदा से टीस ओ देह लगा क' मारने रहथि। कालक्रमेण हुनक निज परिवार मे होइत आकास्मिक आघात सभ सँ बटुक भाई क्रमेण टूटय-हहरय लागल छलाह। बाद मे हुनक अस्वस्थ रहबाक खबरि भेटय लागल। आ एकदिन 16 सितम्बर 2022 क' हुनक देहावसानक समाचार सेहो भेटिये गेल। आइ बटुक भाइ सदेह नहि छथि। मुदा हुनकर कहल कएकटा बात हमरा मोन मे चलौत रहैत अछि। हुनका कतेक आत्मीयता रहल होयतनि जखन ओ कहने छलाह जे ''नाटक करैत छी तँ करू मुदा पढ़ाइ-लिखाइक शर्त्त पर नहि, पढ़ाइ-लिखइ केँ कात क'क' नहि।'' बटुक भाइ मैथिलीक एकटा 'सेलिब्रीटी' रहथि। अपना समयक ओ एकटा सुविख्यात व्यक्तित्व छलाह। हिनक अपन भाषा पर गर्व, अपन संस्कृति पर गर्व, अपन मिथिला समाज आ एकर सामाजिक तानी-भरनी पर गर्व आइयो ततबे प्रासंगिक अछि। हिनक भाषा ज्ञान साहित्यिक ज्ञान, आलोचनात्मक-समीक्षात्मक व्योरा, अपन समाजक गंभीर अनुभव, अपन सांस्कृतिक परम्पराक गहन अध्ययन, संस्कृति कर्मक सक्रिय ज्ञान, कुशल नेतृत्वकारी भूमिका, संगठनात्मक दक्षता, लेखकीय मान-मर्यादा, संस्थाक लोकतात्रिक संचालन मे अटूट विश्वास आदि सद्‌गुण आइयो ततबे प्रासंगिक अछि। भंगिमोक संचालन मे कएक प्रकारक उघबा सभ उठैक मुदा तकरा नितान्त लोकतांत्रिक प्रक्रियाक संग समाधान करथि। जाधरि भंगिमा मे सक्रिय रहलाह, कहियो एहि सांस्थानिक लोकतांत्रिक मूल्य केँ तिरोहित-विसर्जित नहि होअय देलाह।

बटुक भाइ 'भंगिमाक सर्जक-मण्डलीक लोक छलाह। ताहि ब्याजेँ ओ पटनाक गम्भीर रंगमंच (सीरियल थियेटर) आ जिम्मेदार रंगमंच (रिस्पौन्सेबुल थियेटर) क लोक छलाह। भंगिमाक निर्माणकाल सँ ल'क' अपन जीवनक अंतिम काल धरि जे ई भंगिया मे आकि अन्यान्य संस्था सभ मे अपन सक्रिय योगदान देलनि से आइयो बेछप अछि।

खगता अछि ओहि आँखि केँ जे एकरा हिसासि क' देखि सकया, हुलासि क' देखि सकय। अपन पुरखाक अवदान केँ अख्यासब, समुचित अवसर पर मोन पाड़ब आकि ओहि अवदानक पुनर्मूल्यांकन करब ई एकटा जीवित समाजक लक्षण अछि। बटुक भाइ एही जीवित समाजक सृजन-सम्बर्द्धन मे आजीवन लागल रहलाह। आब हुनकर अवदानक बेर उनहि गेल छनि। आब हमरा लोकनिक प्रतिदानक बेर अछि। एहि क्रम मे बटुक भाइ कैँ हमरा लोकनि विभिन्न कार्यक्रमक ब्योजें मोन पाड़ैत छी सेहो एकटा नीक आ उचित श्रद्धांजलि अछि मुदा हुनका प्रति सर्वाधिक ठोस श्रद्धांजलि ई होयत जे हुनक समस्त छिड़ियायल लेखा, आलेख, सम्पादकीय विभिन्न अवसर पर देल गेल वक्तव्य सभ कैँ पुस्तकाकार रूप मे संरक्षित कयल जाय एहि सँ समकालीन पीढ़ीक संगहि अगिला कएक पीढ़ी लाभान्बित होइत रहत।

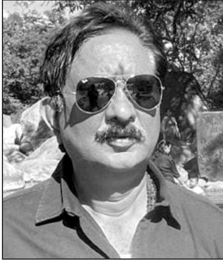
बटुक भाइ एकटा अजातशत्रु रंगचिन्तक छलाह। हुनक विराटकार्य व्यक्तिवक सोझाँ हमर ई संस्मरण-लेख अत्यंत छोट अछि, एकटा छोट-छीन तुलसी पात सन। अपन एहि अजातशत्रु रंगचिन्तक केँ हमर श्रद्धांजलि।

संदर्भ

(1) पृ-57, भंगिमा-57 (पत्रिका), सम्पादक-किशोर केशव, दिसम्बर 2021
(2) पृ-58 ,, ,,
(3) पृ-58 ,, ,,
(4) पृ-58 ,, ,,
(5) पृ-60 ,, ,,
(6) पृ-24, पहिल साँझ (नाटक)
नाटककार-सुधांशु 'शेखर' चौधरी, मैथिली अकादमी, पटना, 1982
(7) पृ-94 ,, ,,
(8) पृ-56-65, भंगिमा-57 (पत्रिका), सम्पादक-किशोर केशव, दिसम्बर 2021



मिथिलेश कुमार मिश्र
संयुक्त सचिव
झारखण्ड विधान सभा
मो.-9431883026



भाई जी : हमर प्रेरणा स्रोत

अपन सम्पूर्ण जीवन व्यक्तित्व पर दृष्टिपात करी त मोन मे ई बात सदिखन अबैत अछि, जे किछु लोक निश्चित रूपेँ एहन प्रतिभा सम्पन्न होईत छथि, जनिकर प्रभाव अकस्माते हमरा लोकनिक मानस पटल पर पड़ि जाईत अछि।

व्यावहारिक रूपेँ हम अत्यल्प शब्द मे ओहि एक-एक क्षण केँ आइयो याद क' क' रखने छी आ ओकरा व्यक्त सेहो क सकैत छी से दृढ़ विश्वास अछि। तेँ जँ कही जे भाई जी हमर प्रेरणास्त्रोत रहलाह अछि त' कोनो अतिश्योक्ति नहि।

नेनपने सँ आकाशवाणी पटनाक चौपाल कार्यक्रम सुनैत अयलहुँ अछि बात 1972 ई. अछि तहिया 8-9 बरखक रही दरभंगा सँ मनीगाछी जएबा काल गाड़ी मे एकहि बेंच पर बैसवाक अनुभव संभवतः के.बी.सी. के हॉटसीट पर अमिताभ बच्चन सँग जे कियो बेसैत छथि, ताहि सँ कनेको कम आहलादकारी नहि छल। हुनक मधुर बोल आइयो कान मे ओहिना रस घोरवा मे सक्षम अछि।

बादक समय मे 1972-73 मे चेतन समिति द्वारा आयोजित विद्यापति पर्व समारोह मे मंचित नाटक भफाईत चाहक जिनगी के अभिनेता आईयो ओहिना मानस-पटल पर छथि। विद्यापति पर्व समारोह मे हुनक उदघोषणा आ कि आन-आन हिन्दी मैथिली मंचपर हुनक उदघोषणा मे प्रयुक्त एक-एकटा शब्द स्पष्ट उच्चारण संग श्रोतावर्ग केँ आह्लादित करैत छल यथासंभव हम ओहि श्रोतावर्ग मे रहबाक लेल सदैव सचेष्ट रहैत छल हुँ। 1983 ई सँ विद्यापति पर्व मे नाटक करबाक कएक खेप अवसर भेटल। शैलबाला पुरस्कार सेहो 2002 मे भेटल मुदा मंच पर सदैव एकटा व्यक्तित्व जे हमरा समक्ष रहैत छलाह ओ छलाह भाई जी। हमरा लोकनि परोक्ष मे सेहो भाई जी अथवा बटुक भाई कहैत छलियनि। छत्रानन्द जी कहबा मे जीह आ दिमाग सही ढ़ंग से सँग नहि दैत छल, आ से अशोक मे होईत छल आकाशवाणी, पटनाक कार्यक्रम भारती क कम्पीयरिंग काल। कारण ओहि मे छत्रानन्द जी कहि क संबोधित करए पड़ैत छल, ओ ततबे कष्टकर क्षण होईत छल, जेना अपन पिता केँ हुनक नाम सँ संबोधित कए शोर पारब।

हमरा जनैत एक छत्रानन्द सिंह झा (बटुक भाय) हमरा सभक भाई जी मैथिली कला जगत के एकटा एहन ध्रुवतारा छलाह जे राष्ट्रीय स्तर आ राज्य स्तरक गोटेक सए गायक/गीतकार/रंगकर्मी/निर्देशक/कलाकार केँ गढ़लनि।

अमर रहथि छत्रानन्द जी!



1984 ई. सँ भंगिमा क गठन के उपरांत पाई संग्रहक मूल दायित्व भाईजी प्रेमलता जी आ कुणालजी पर रहैत छलैन्ह ओहि समय मे संभवतः कार्यकर्त्ता मे एकटा राजदूत हमरा लग छल आ एकटा बजाज अरूण आचार्य लग तेँ सारथी बनबाक सौभाग्य सदिखन हमरे भेटैत छल, चन्दा उगाही काल, किऐक्त त' हमसभ दूनू गोटे एकहि ठाम रहैत छलहुँ।

भंगिमा क वार्षिकोत्सब मे मंचित नाटक देसिल बएना मे निर्देशक छलाह किशोर। अपना आवाज कद-काठीक अनुरूप हम मुख्य खलनायक अरिमर्दन ठाकुर केर भूमिका करए चाहैत रही, मुदा किशोरक जिद। आदेशक आगाँ विवश भए भूमिका करए पड़ल नायक वाचस्पति ठाकुर, जनिका विद्यापति जँका ओहि नाटक मे प्रोजेक्ट कएल गेल छल। हमरा लेल ओ भूमिका लगभग असंभव सन छल, मूदा हमरा मोन अछि जे हम भाईजीक एक-एकटा गेश्चर-पोश्चर केँ अपना दिमाग मे बैसा ओहि अनुरूप सौम्य नायक केँ भूमिका कएल हुँ। किशोरजी आ चुन्नूजीक मोताबिक ओ हमर जीवनक सर्व श्रेष्ठ अभिनय छल। पंडित ताराकांत झा जी ततबा प्रभावित भेल छलाह, जे ओहि नाटक पर फिल्म बनेबा लेल उत्सुक छलाह, मुदा कोनो कारणेँ नहि भ सकल।

...श्रद्धा सुमन अर्पित करैत मात्र एतेब जे मैथिली साहित्य केँ जँ महाकवि विद्यापति/ ज्योतिरीश्वर/उमापति चन्दा झा/मधुप/ यात्री/भुवन/ हरिमोहन झा गौरवान्वित कएलन्हि तँ मंचीम मैथिली नाटक केँ छत्रानन्द सिंह झा

आकाशवाणी, पटनाक मैथिली कम्पीयर/ कलाकार/ बी. हाई श्रेणी/रूप मे गोटेक हजार कार्यक्रम मे अनुबंधित भेल हुँ, आ प्रत्येक दिन अनिवार्य रूप सँ भाईजी सँ भेट करब हमर रूटीन मे सम्मिलित रहल। चौपाल मे हुनक अनुपस्थिति मे कम्पीयर (मैथिली) केर काज करबा मे किछु शून्यता सन सदैव लगैत छल।

ई बात कते लोक केँ बूझल-गमल होइतैन्हि, जे भाईजी अंग्रेजी मे स्नाकोत्तर छलाह आ विलक्षण अंग्रजी लिखैत छलाह। तेँ अपन कैरियर मे चाहे बैंक, बिहार लोक सेवा आयोग, विश्वविद्यालय सेवा आयोग भाभा एटोमेटिक रिसर्च सेंटर बॉम्बे सहित जाहि कोनो संस्थानक साक्षत्कार मे गेलहुँ हुनका सँ एक-दु दिन धरि बैसि क गुरूमंत्र अवश्य लैत रही।

सॅगे-सॅग मंचीय नाटक करबाक अवसर त' नहि भेटल मुदा मार्ग दर्शक सदैव भाईजी रहलाह चाहे निर्देशक कियो होथि।

2005 मे पटना छुटि गेल, रॉची आबि झारखण्डी भ' गेलहुँ, मुदा भाईजीक स्नेह मे कोनो कमी नहि भेल। कम सँ कम 25-30 खेप रॉची सँ पटना जा क' नाटक केर रिकॉर्डिंग मे भाग लेलहुँ आ हमरा लेल पूर्वाभ्यास आ ध्वनयंकन शनि-रवि केर राखल जाईत छल, तकर साक्षी हेताह उमा भाई, किशोर, मनोज पाठक, आदरनीया प्रेमलता जी आशा चौधरी जी सहित आन कलाकार लोकनि।

रॉची अएलाक बाद हमरा कन्याक विवाह मे सम्मिलित होएबा लेल ओ पटना सँ रॉची आयल छलाह, से आहलादकारी क्षण छल। एक बेर ओ भौजीक संग संभवतः 2015 मे राँची आयल छलाह आ सारक आवास पर रूकल छलाह। भेंट भेलाक बाद हमरा लोकनि दू दिन भाईजी-भौजी, हुनक सार-सरहोजि काफी घूमल-फिरल रही। हुनक सार प्रोफेसर साहब के कहने रहियन्ह, जे हमरा नीक नहि लगैत अछि जे हम सभ मिथिलेश जी केँ परेशान क' रहल छी।'' भाईजी प्रत्युत्तर मे कहने छलखिन्ह, जे हमरा त' बहुत नीक लगैत अछि, जे हमर एकटा चेला भाई एहि रूप मे हमरा सभक सोझाँ अछि तेँ ई त' हिनक दायित्व/कर्त्तव्य छियैन्ह।

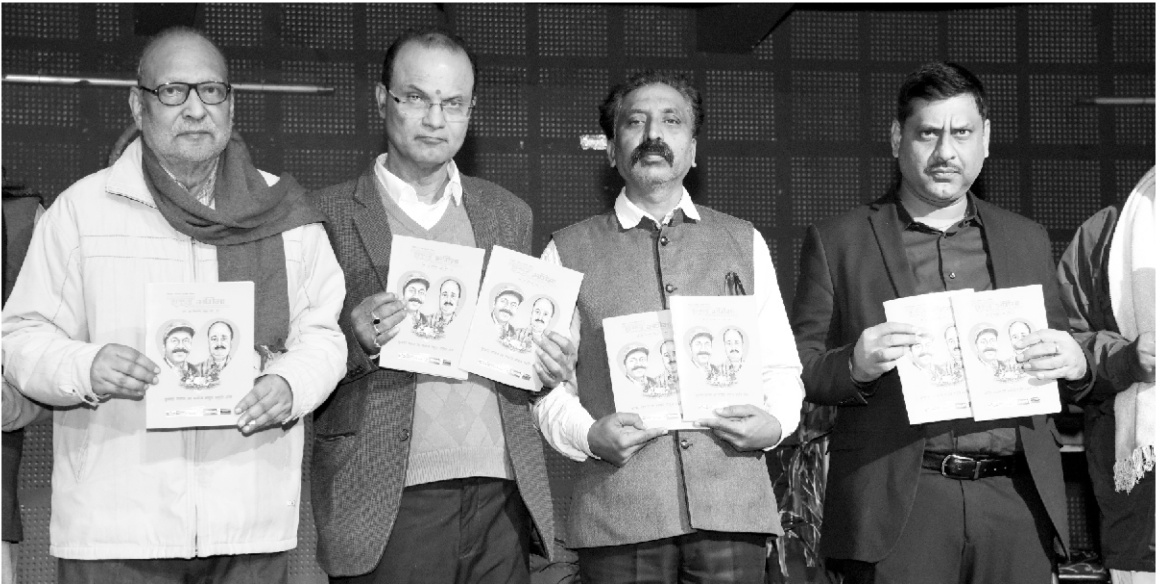
मंचीय उदघोषणा लेल किछु शेर/कविता जे सिखौने छलाह, आईयो ओकर उपयोग मे पाछाँ नहि रहैत

छी। विधान सभाक स्थापना दिवस, झारखण्ड मिथिला मंचक मिथिला महोत्सव सहित अनेकानेक सरकारी/गैर सरकारी कार्यक्रम मे मंच संचालक/वक्ता रूप मे जँ सफल भेलहुँ, त' पूर्ण श्रेय भाईजी केँ/एखनहुँ 10 सँ 12 जुलाई धरि झारखण्ड विधान सभा द्वारा आयोजित विधि निर्माणक प्रक्रिया विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम मे 5 गोट विद्वान (संविधान विशेषज्ञ) दिल्ली सँ आयल छलाह आ छठम संसाधन पुरूष (रिसोर्स पर्सन) हम रही। प्रशिक्षु छलाह राज्यक सभ विभागक अपर मुख्य सचिव / प्रधान सचिव / सचिव / अपर / संयुक्त सचिव / उप सचिव। 30 मिनट के व्याख्यान काल सेहो भाईजी हमरा आँखिक सोझाँ छलाह, ओहि स्टाइल मे माइक्रोफोन के उपयोग हम आईयो करैत छी।

अंत मे एकटा बात कहब शेष रहि गेल आयुष्मान भारत जखन प्रदेश मे लांच भेल छल त' साँ एण्ड ड्रामा डिविजन केँ ओकर प्रचार-प्रसार केर भार भेटल छलैक, गीत-नृत्य-संगीतक माध्यमे ओहि कार्यक्रम मे आदरणीय कुणालजीक अनुशंसा पर हम निर्णायक रही। मंच पर स्वास्थ्य मंत्री सहित विभागीय सचिव / उपायुक्त, राँची/ निर्देशक स्वास्थ सेवा सहित आनो वरिष्ठ लोक छलाह। हमर संबोधन सँ पूर्व उदघोषिका हमर परिचय राज्य सरकारक संयुक्त सचिव रूप मे दैत आन-आन बात बजलीह। मुदा हम अपन संबोधनक प्रथम वाक्य मे कहने रही, जे हमरा रंगकर्मी होएबा पर गर्व अछि जे 35 वर्ष सँ मंच सँ जुड़ल छी, संयुक्त सचिव होएब हमरा लेल कोनो विशिष्ट बात नहि।

कहबा लेल सगर राति अछि, मुदा पत्रिका मे स्थानक विचार करैत पुनः पुनः श्रद्धा सुमन अर्पित करैत मात्र एतबे जे मैथिली साहित्य केँ जँ महाकवि विद्यापति/ ज्योतिरीश्वर/ उमापति / चन्दा झा/मधुप/ यात्री/भुवन/ हरिमोहन झा गौरवान्वित कएलन्हि तँ मंचीय मैथिली नाटक केँ छत्रानन्द सिंह झा। इति





भंगिमा पत्रिका अंक 57 के विमोचन करैत अतिथि संग बटुक भाइ

प्रियंका कुमारी
पी.एच.डी. शोधार्थी (मैथिली)
(एल.एन.एम.यू.दरभंगा)



हमरा मोन अछि...

हमरा मोन अछि, वर्ष रहैक 2000 आ हम रही दस सालक। जहिना कोनो सामान्य आय-वित्तक मैथिल परिवार पटनामे रहैत अछि, तहिना हमहूँ सब रहैत आ स्कूलमे पढ़ैत रही। बाबूजीक सामान्य नोकरी रहनि। परिवार कहुना डेबैत रहथि। ताधरि कोनो सपना नहि देखैत रही हम, देखिये की सकैत रही! दिसम्बरक मास रहैक। डेरा पर भाइजी अयलाह, भाइजी माने हमर जेठ पिसियौत, श्री भास्करानंद झा। कहलनि जे अहाँ कैं नाटक करबाक अछि, बच्चा सभक नाटक छैक ''पंडित आ गड़ेरिया''। बच्चे सब अभिनय करतैक आ हम तैयार (निर्देशन) करेबैक। चारिटा बच्चा चाही। हमरा मोन अछि जे घरमे खूब घमर्थन भेल रहैक। नाटक किएक करबाक चाही, रिहर्सलमे कोना अओतैक-जयतैक, बड़ समय लगतैक...आदि...आदि। रास्ता निकलल जे रिहर्सल लेल विद्यापति भवन नहि जाय पड़तैक, लगेमे हमर कक्काजी घरपर रिहर्सल होयतैक। आ अन्ततरू माँ-बाबूजी तैयार भेलाह जे हम चारू भाय-बहिन नाटक करब-हम, हमर भाइजी राहुल कुमार झा, हमर पितियौत भाय पंकज झा आ पितियौत बहिन पूजा झा। बादमे बुझलियैक जे ई नाटक ''भंगिमा''क लेल छैक आ ओकर वार्षिक आयोजन ''ठहाका''मे एकर मंचन होयतैक। से भेलैक विद्यापति भवनमे। बहुत दिनक बाद भंगिमा ''बाल नाटक'' क' सकल रहए। से भास्कर भाइजी भेलाह हमर रंगमंचक पहिल गुरु। आइयो कोनो नाटकमे अभिनय करब गछबासँ पूर्व हुनक आदेश हमरा लेल अध्यादेश होइत अछि। अभिनयक महीनी बुझयबाक लेल हम आइयो हुनके तंग (फोन) करैत छियनि। से ''पंडित आ गड़ेरिया'' नाटक भेलैक आ लोककैं नीक लगलैक। हम एहि नाटकमे पंडिताइनक भूमिकामे रही। हमर भूमिका सेहो पसिन्न कयल गेल। माँ-बाबूजी खूब प्रसन्न भेल रहथि। तकर बादसँ हुनकर सबटा किन्तु-परन्तु समाप्त भ' गेलनि। अगिला बेरसँ जखन-जखन नाटक करी, माँ-बाबूजी भरि मोहल्ला अपनहि नाटकक आमंत्रण-पत्र बाँटल करथि। भाइजीकैं नाटक करब ओतेक नहि रुचनि, मुदा माँ-बाबूजीक आग्रहपर करथि। से एहि लेल जे हमरा रिहर्सल अयबा-जयबामे सुविधा होयत आ ओहोलोकनि आश्वस्त रहताह। रिहर्सलसँ घुरबामे कहियोकाल देर-सबेर तँ भइये जाइक। मोन पड़ैए जे हमर पहिले नाटकक बाद बटुक भाइजी आ माँ प्रेमलता जी हमरा पंडिताइन कहब शुरू क' देलनि। बटुक भाइजी आब नहि छथि, मुदा माँ आइयो कहियो काल हमरा पंडिताइने कहिक' सोर पाड़ैत छथि, से हमरो नीके लगैत अछि।

एहि नाटकक सफलता आ भेटल प्रशंसासँ हमरा जेना नाटक करबाक लुतुक लागि गेल। एहन लुतुक जे आइयो जारी अछि। एहि बीच पैघ भेलहुँ, बियाह भ' गेल, सासुर बसि गेलहुँ, एकटा बेटीक माइयो बनि गेलहुँ, मुदा नाटक

करिते छी आ प्रायः करिते रहब। बस मौका भेटल ताकए। आब तँ बेटीकेँ संगहि ल' क' रिहर्सलमे जाइ छी। बेटी छोट अछि से ओ नंगो-चंगों तँ करैए रिहर्सलमे, मुदा सबटा मैनेज भ' जाइ छै। सहयोगी कलाकारलोकनिक ओ खेलौना होइए रिहर्सलमे। की कहल जाए, हुनकालोकनिक सदाशयता-उदारता...!

हम वर्ष 2000 मे नाटकसँ जुड़लहु जरूर, मुदा जल्दी-जल्दी अवसर भेटैत गेल। वर्ष 2006 धरि बाल नाटकक अनिवार्य कलाकार रहलहुँ आ एहिक्रममे ''मिले धोंछ मे धोंछ'', ''हमर इस्कूल तोहर इस्कूल'', ''अन्हेर नगरी चौपट राजा'', ''शक'' (हिन्दी) आदि नाटकमे अभिनय कयलहुँ। एकर सभक रिहर्सल हमर डेरे लग मिथिलेश भैयाक घरपर भेलैक। तहिया हम सभ पोस्टल पार्क रोड नम्बर-4मे रहैत रही।

मोन पड़ैए जे वर्ष 2006 रहैक प्रायः कुणालजीक निर्देशनमे उमापति उपाध्यायक नाटक ''पारिजात हरण''मे अभिनय करबाक मौका भेटि गेल। ई बच्चा सभक नाटक नहि रहैक। मुदा हमरा चुनि लेल गेल। तखन हम दसमा वर्गमे पढ़ैत रही। अचानक हम पैघ मानि लेल गेलहुँ। बोर्ड परीक्षाक समय छल। तैयो माँक (प्रेमलता मिश्र प्रेम) संग बाँकीपुर गर्ल्स स्कूलसँ सोझे हुनके संग रिक्शासँ रिहर्सलमे चलि जाए पड़ए। माँ ओही स्कूलमे शिक्षिका सेहो रहथिन। तें हमर ''मैडम'' सेहो छलीह। एहि नाटकक मंचन दिल्ली, गुआहाटी, तेजपुर आदि आर कएक ठाम भेलैक। हम सभठाम मंचनमे गेल रही। एहि नाटकमे हमर ''सुमुखी''क भूमिका छल। ''साइड रोल'' रहैक। ई ओ समय छल जखन हम नाटक करबाक अर्थ, बचल समयक सर्जनात्मक सदुपयोग करब मात्र बूझी। मुदा माँक संग सभ दिन रिहर्सलमे आयब-जायब हमरा पर बहुत गहींर प्रभाव छोड़लक। आ एहि ठामसँ नाटक हमर जीवनक अनिवार्य अंग बनि गेल।

एहि नाटक बेरमे हमर माँ बहुत सहायता कयलनि, से बादोमे करैत रहलीह। ओ दू-दूटा टिफिन देल करथि। एकटा हम स्कूलमे खा ली आ दोसर रिहर्सलमे पहुँचलाक बाद। जा बाकी कलाकार अबथिन, हम अपन ''होम वर्क'' सेहो ओही ठाम रिहर्सल रूममे कयल करी। होइ एना जे भोरे नौ बजे घरसँ निकली स्कूल लेल। दस बजेसँ चारि बजे तक स्कूल आ तकर बाद सोझे रिहर्सल। रिहर्सल शुरू होइक 6 बजे आ 9 बजे तक होइक। तकर बाद घर घुरी। मुदा कोनो आलस्य नहि, कोनो थाकनियो नहि। खूब मोन लागए। रवि दिन आ अन्य छुट्टी दिन भाइजी संग डेरासँ सोझे रिहर्सलमे। अपना सवारी छल नहि आ सार्वजनिक परिवहन ताधरि ओतेक बढ़िया नहि रहैक, जे रहैक माने रिक्शा, से बड़ महग। से बेसी काल हम दुनू भाय-बहिन पयरे पोस्टल पार्कसँ पहुँचि जाइ विद्यापति भवन। घुरतीकाल रिक्शा कि टेम्पू जे भेटि जाए, क' ली। विवाह (वर्ष 2012) धरि इएह एहिना चलल।

एक बेरक घटना थिक। ''चेतना समिति''क नाटकक रिहर्सल करैत रही। डॉ. अरविन्द अक्कू लिखित नाटक रहैक ''तेसर घर''। आब काल्हि नाटक छलैक, कि आइ समाद अयलैक जे हमर नानाजी नहि रहलाह। सब गोटे लत्ते-पत्ते भगलहुँ नानी गाम। प्रात भेलैक बाबूजी आ माँ तुरंत एक आदमी संग लगा हमरा पटना पठा देलनि। कहलनि-''तोहर नाटक एहि बेर हमसब नहि देखि सकबौ, एहिठाम रहब जरूरी छैक... मुदा तू जो पटना, नाटक मोनसँ करिहें। तू समाजक काज करैत छें। समाजक काज नहि बिथुत होयबाक चाही।'' आँखि भरि गेल रहए हमर। पटना अयलहुँ आ साँझमे नाटक कयलहुँ। नाटक समाप्त भेलाक बाद प्राते फेर हम नानी गाम गेल रही। एहन छल हमर माँ-बाबूजीक समर्थन आ सहयोग।

हम बेसी नाटक ''भंगिमा''क संग कयलहुँ। ''भंगिमा''क दूटा प्रमुख आयोजन छैक, तहियो रहैक-''वार्षिकोत्सव'' आ ''ठहाका''। ''ठहाका''मे शीतलहरीमे रिहर्सल आ ''वार्षिकोत्सव''मे पानि-बुन्नी आ मेघ गर्जनक बीच। ''वार्षिकोत्सव''क रिहर्सलमे हम अपन बैगमे एकटा अतिरिक्त कपड़ा घरसँ ल' क' जाइ, कदाचित जँ रस्तामे भीजि जाइ तँ रिहर्सलमे जा क' कपड़ा बदलि ली। भीजल कपड़ामे कतेक काल लोक रहतैक? मोन नहि खराब भ' जयतैक, तें। रस्ता-पेरा से पानि भरल रहैक, बड़ तरदुदसँ जाए-आबए पड़ए, एक तरहें पानिमे हेलिक'। स्कूल लेल जुत्ता अलग आ पोलीथिनमे एकटा चप्पल अलग, से सदिखन रहए। ई स्मृति एखनो रोमांचित क' दैए।

तकर बाद वर्ष 2008 मे बटुक भाइजीक लिखल नाटक किशोर केशवक निर्देशनमे करबाक अवसर ''दुर्घटनावश'' भेटल। नाटक रहैक-"सुनू जानकी"। एहि नाटकमे माँ (प्रेमलता मिश्र) सीताक भूमिका करैत रहथिन। मुदा कोनो कारण भेल होयतैक, ओ उपलब्ध नहि भेलखिन। तखन हमरा कहल गेल सीताक भूमिका करबाक लेल। मतलब, अगिला छड़पानमे एके बेरमे माँक स्थानापन्नमे प्रियंका! जे स्कूलमे हमर शिक्षिका, रंगमंचमे पथ-प्रदर्शक आ ''रोल-मॉडल'' तथा पारिवारिक जीवनमे अभिभावक, तिनकर छोड़ल (अथवा कयल) भूमिकामे हम! बाल कलाकार प्रियंका, अचानक वयस्क तँ पहिनहि बना देल गेल छलीह, मुदा ''साइड रोल'' वाली प्रियंका आब ''लीड रोल'' करतीह! हमर आश्चर्यक सीमा नहि रहल! ओही रोमांच आ उत्तेजनामे हम ''हँ'' कहि देल। से किशोर चच्चा खूब नीकसँ नाटक आ विशेष रूपसँ हमरा तैयार करौलनि। एकर तैयारी एहन भेल रहैक जे एहि नाटकक सीताक संवाद हमरा आइ धरि मोने अछि। ...आह! ...एतबे दिनमे हमरा मैथिली रंगमंचक सुपर स्टार उमाकांत झा, कुमार गगन, लक्ष्मी रमण मिश्र, ब्रह्मानंद झा आदिक संग मंचपर उतरबाक सुयोग लागि चुकल छल।

ओही स्कूली जीवनक गतिविधिक बीच हम ''अक्षरा आर्ट्स''क संग एकटा हिन्दी नाटक कयलहुँ, ''शक''। फिल्म अभिनेता मनोज वाजपेयी एहि नाटकमे अभिनय लेल हमरा पुरस्कृत कयलनि। फेर एक दिन सहयोगी कलाकार सुमित ठाकुर ''इप्टा'' ल' गेलाह तँ ओहूठाम एकटा नाटक तनवीर अख्तर जीक निर्देशनमे कयलहुँ-''धरती का जादूगर''। ''भंगिमा'', ''अरिपन'' आ ''चेतना समिति''क मंच आ नाटकक तँ हम एक तरहें नियमिते कलाकार छी।

अस्तु, वर्ष 2012 मे विवाह भ' गेल, से मुदा पटनेमे भेल। माने विवाहक बाद शहर नहि छूटल कि बदलल। सासुरमे सेहो सभक सहयोग भेटल, विवाहक पूर्वहि हमर रूचि आदिक विषयमे कहि देल गेल रहनि, संभवतः: तकरो असरि पड़ल हो। हमर पति महाशय ''महादेव'' छथि, हुनका नीक लगैत छनि जे हम नाटक करैत छी आ से खूब सहयोग करैत छथि। कहियोकाल रिहर्सलमे देरी होइत छैक, तँ कोनो सहयोगी कलाकार हमरा घर पहुँचाबैत छथि, ई संस्थाक नियम छैक। तँ तकर कोनो अधलाह कहियो केओ सासुरमे नहि माननलनि। एवंक्रमे हमर नाटक चलैत रहि रहल अछि।

नवकनिया रही तँ थोड़ेक दिन नाटक नहि क' सकलहुँ। मुदा नाटक देखय जाइ जरूर। ई छल नाटकमे हमर अप्रत्यक्ष जुड़ाव आ योगदान। फेर ''अरिपन'' लेल मन्त्रेश्वर झा लिखित नाटक ''किए चुप अछि बसन्ती''मे अभिनय कयलहुँ। ओही बीचमे टीवी सीरियल ''नयन ने तिरपित भेल'' आ प्रसिद्ध मैथिली फिल्म ''मिथिला मखाना''मे सेहो अभिनय करबाक अवसर भेटल, जकरा राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर अनेक पुरस्कार भेटलैक। आकाशवाणी, पटनाक रेडियो धारावाहिक ''पुरुष परीक्षा"मे सेहो अभिनय कयलहुँ। हमरा लगैएय कोनो काजक लेल अपन इच्छा-शक्ति मजगूत रहबाक चाही। विघ्न-बाधाक काज छैक आयब, ओ आओत, मुदा जँ अहाँक इच्छाशक्ति मजगूत रहत, धैर्य आ उत्साह रहत, मनोबल आ आत्मविश्वास रहत, तँ कार्य होयबे करत आ सफलता भेटबे करत।

वर्ष 2018मे बेटी जन्म लेलक। ओकर परिचर्या करब आवश्यक छल। की करी की नहि, से सोचितहि रही, कि ताबते कोरोना आबि गेल। सब किछु ठप तँ नाटककेँ के पुछैए? मुदा कोरोनामे हमर प्रिय कुमार गगन चच्चा आ मनोज मनुज चच्चा हमरा सबकेँ छोड़ि गेलाह। बड़ दुःख भेल-मुदा, एहि पर ककर वश? हुनकालोकनिक स्मृतिमे वर्ष 2021मे ''भंगिमा'' द्वारा नाट्य महोत्सव करबाक नेयार भेल। हमर मोन कोना मानितए? बेटी यद्यपि तीनिए सालक छल। तैयो हम एकटा नाटक ''नदी गोंगिआयल जाए''मे अभिनय कयलहुँ।

हमर एखन धरिक अनुभव कहैत अछि, जे रोजी-रोजगार हो कि अपन रूचि-पूर्ति, परिवारक सहयोग आ समर्थनक बिना केओ किछु नहि क' सकैत अछि। जीवनक कोनो क्षेत्रमे आगाँ बढ़बाक लेल, स्त्री हो कि पुरुष, हुनका परिवारक भरपूर सहयोग चाही। स्त्रीगणक मामिलामे हुनका नैहर आ सासुर दुनू ठामक सहयोग चाही। एहि मामिलामे हम संभवतरू कनेक बेसीये भागमंत छी। नैहरमे हमरा माँ, बाबूजी, भाइजी आदि परिवारक सब सदस्यक सहयोग आ समर्थन भेटल। नीक-नीक सुझाव भेटल। कहियो केओ नाटक छोड़बाक लेल नहि कहलनि। हँ, एहि लेल कनेक

अपनहुँ जोर लगब' पड़ल, प्रयास कर' पड़ल, सबकेँ बुझाबय-सुझाबय पड़ल। एहि लेल बहुत रास धैर्य आ सही समयक ज्ञान होयब जरूरी होइत छैक।

हँ, विवाहक बाद एक बेर लागल छल जे भरिसक आब नाटक नहि क' सकब। सासुरक नव घरमे ओझरा गेल रही। समये नहि बचए। फेर प्राइवेट नोकरी करय लगलहुँ। तखन आर मोश्किल भेल। मुदा रिहर्सलक जखन बेर होइ तँ अपन ''बॉस'' सँ कहियनि, ओ एक घन्टा पहिनहि छुट्टी द' देइथि। हमर ''टीम मेम्बर'' सब सेहो बहुत सहयोग कयलनि आ हमर रिहर्सल आ नाटक चलैत रहल। मुदा स्थिति बदलल तँ छोड़लहुँ नोकरी। घरकेँ व्यवस्थित कयलहुँ। आब कनेक कम सही, नाटक क' तँ पबैत छी।

...अभिनयक हमर ई यात्र चलिते रहत। ने ई हमरा छोड़त आ ने हम एकरा छोड़बैक। आजीवन नहि छोड़बैक एकरा। हमरा अभिनय आ रंगमंचसँ प्रेम भ' गेल अछि। तँ प्रेमकेँ कोना बिसरा दियैक? ङ्केम बिसरल जाइत छैक की? प्रेमक निर्वाह करबाक लेल तरदुद तँ होइत छैक, परिवारमे सेहो दिक्कत होइत छैक, परिवार-बच्चा-पढ़ाइ आ पेशा-एहि सभक बीच संतुलन बनायब कोनो ठट्ठा नहि छैक। मुदा हौसला आ समर्पण हो तँ से कयल जा सकैत छैक। हम तँ कइये रहल छी, आ से हम कोनो एसगर उदाहरण छी? हमरासँ पूर्व कतोक अभिनेता-अभिनेत्री ''रोल मॉडल'' बनि चुकल छथि। हम तँ तकर मात्र अनुसरण करबाक प्रयत्न क' रहल छी। ...तें आब सपना देखैत छी, जे जीवन-पर्यन्त नाटक करिते रहब। हम कहब, अपन मोनमे अपन इच्छाकेँ, अपन सपनाकेँ जीवित राखू, समय-समय पर ओकरा जगबैत रहू आ सही समय पर सही उद्यम करू।



नाटक ''शपथग्रहण'' के एक दृश्य मे रश्मि मिश्रा, रूचि रानी आ अन्तेश झा

हीरेन्द्र कुमार झा
सचिव, भद्रकाली नाट्य परिषद्,
कोइलख, मधुबनी



सुनू जानकी आ...

मैथिली साहित्यक आरम्भ भेल रहै 'धूर्त समागम' सन सशक्त आ लक्ष्यनिर्धारित नाटकसँ। फेर विद्यापतियो गोरक्ष विजय लिखिकऽ नाटकक महत्ताकेँ स्वीकारबाक सन्देश देलनि। तकराबाद बीसम शताब्दीतक तऽ मैथिली मात्र आ मात्र नाटकेक बलें जीवैत रहली।हम जनैत छी अहाँ चन्दाझाक नाम लऽ हमरा रोक चाहब। से, हुनका प्रति अपन समस्त श्रद्धाक अर्पण करैत कहब जे रामक कथा हजारो वर्षक पुरान अध्यात्मिक कथा छल जे ओ अपन भाखामे फेरसँ कहलनि। मुदा जे साहित्य हमर मातृभाषा छल तकरा जियौने रहल से छल उत्तर भारतक एक विशिष्ट नाट्य शैली 'कीर्तनिया नाटक' जे नेपालक मल्ल लोकनिसँ लऽकऽ आसामतक अङ्किया नाटकक रूपमे पसरल रहल। उमापति उपाध्यायक 'परिजात हरण' एकनहु सभ साहित्य प्रेमीक बीच सम्माननीय पोथीक रूपमे जानल जाइत अछि। ताहीक समानान्तर छल दर्जनो प्रसिद्ध लोकनाट्यक सुदृढ़ आ लोकरूचिक साहित्य ।

मुदा हठात बीसम शताब्दीक आरम्भ होइत होइत कीर्तनियाक लेखने नहि शनैः शनैः प्रदर्शनो बन्द भऽ गेल। ओना तकर कारण पारसी नाट्य शैली आ फेर हिन्दी सिनेमाक अवतरण सेहो मानल जाइत अछि जे उत्तर भारतक आनो आनो भाषा आ संस्कृति केँ सेहो नीक जेकाँ प्रभावित कयलक। हलाँकि लोकनाट्यक प्रदर्शन बीसम शताब्दीक अन्तिम दशकतक सुदूर गाम जतऽसँ सिनेमा हॉलदूर रहै ग्रामीण मनोरंजनक साधन बनल रहल, मुदा रंगीन टी.भी., भी.सी.आर आ फेर आब प्रोजेक्टरक सुविधाक कारणे सभटा बन्द अछि।

मुदा की नाटकक महत्व समाप्त भऽ गेलै ?आब लोककेँनाटक नहि चाही ? तकर उत्तर ताकबाक लेल ओहि युगमे जाय पड़त जहिया चारि वेदमे साहित्यक सभ विधा समर्थ भऽ गेल छल। जीवनक कोनो क्षेत्र नहि छल जकर समस्याक उत्तर नहि देल गेल रहै ,से आइयो ओ तहिना छै, मुदा से ओकरा लेल ने जे पढ़ि सकैत छल,नहि पढ़ि तऽ सुनिकऽ बुझि सकैत छल। परंच जे अल्पज्ञानी छल ,जे विद्वान कहाइयो कऽ जीवनक व्यवहारिक पक्ष केँ नहि बुझऽ लेल तैयार होइत छल।जकरा अनुचित केँ कियो सामना सामनी नहि बुझा सकैत छल तकरा लेल विद्वत वर्ग सजीव साहित्यक निर्माण कयलनि।तकर नाम पड़ल नाटक!

हँ, वैएह नाटक जाहिके माध्यमे कालिदास दुष्यन्त सदृश राजाकेँ चेतौलनि, राजपरिवारक बीच धोखा आ फरेबक प्रति शेक्सपियर मेकबेथक माध्यमे कहलनि ।

मैथिलीमे से नाटक बीसम शताब्दीक आरम्भेसँ हेरा जेकाँ गेल। हमरा हिसाबें 1970ई. तक मैथिलीमे दसटा नाटक नहि छल। आइयो मंचित होमबला

हमरा लोकनिकेँ आब भौतिक बटुक भाइक सामना होयब भगवती समाप्त अवश्य कऽ देलनि मुदा सुनू जानकी जखन-जखन पढ़ब, जखन कखनो मंचित होइत देखब निश्चित रूपसँ हुनकर नाटकक लेल गँहीर दृष्टि, मैथिली नाटटक मार्गक बाधाक प्रति हुनकर सजगता स्वतः अपना आगाँ ठाढ़ पयबनि।



पचीससँ तीसटा नाटक उपलब्ध नहि अछि। हम एतऽ स्पष्ट कऽ दी जे आन आन भाषाक सङ मैथिली नाटकोक दू भाग भऽ गेल अछि। शहरी आ ग्रामीण रंगमंचक नाटक। ग्रामीण परिवेशमे नाट्य प्रदर्शनकैं पचासटा समस्या आ दुविधाक सामना करऽ पड़ि रहल छै।जकर आधा कारण तऽ तकनीकि आ परिवेशक संस्कृतिमे भेल क्रमिक परिवर्तन छै आ आधा कारण छै शहरी-महानगरी नाट्य प्रदर्शनक समृद्ध व्यवस्था आ तदनुरूप प्रदर्शनसँ उत्पन्न प्रतिस्पर्धा।

हम उपर जे किछु कहऽ चाहि रहल छी तकरा खोलिकऽ कहि गेल छथि 'छत्रानन्द सिंह झानहि सोझे हमर, अहाँक, सभक 'बटुक भाइ' अपन नाटक सुनू जानकी मे। बटुक भाइकैं हम आ हमरा वएसक लोक बटुक भाइए जनैत रहलनि। बटुक भाइसँ हमरा व्यक्तिगत कोनो परिचय नहि रहितहुँ हुनकर गतिविधिक चर्चा सभक माध्यमे होइत रहैत छल। खासकऽ 'अरिपन' आ 'भंगिमा'क चर्चा हो आ बटुक भाइक चर्चा हुनकर योगदानक चर्चा भेने बिना कोना रहत।रेडियो नाटकक माध्यमसँ मैथिल समाजक आधुनिक समस्याकैं नाट्य साहित्यसँ जोड़लनि। फेर ओ प्रवाह मंचीय प्रदर्शन दिस मोरलनि। परिणामस्वरूप पटना कैं आधुनिक मैथिली नाटकक केन्द्र बनबाक सौभाग्य भेटि गेलै ।आइ मैथिली साहित्यक आन कोनो विधा कतबहु पसरि गेल हो, मैथिली नाटकक अद्यतन प्रगति बुझबाक हो तऽ पटना जाय पड़त।

आइ मैथिली साहित्यक आन कोनो विधा कतबहु पसरि गेल हो, मैथिली नाटकक अद्यतन प्रगति बुझबाक हो तऽ पटना जाय पड़त।

मुदा फेर हमर मिथिला जकर सभसँ पैघ शहर जेकाँ एकटा शहर दरभंगा छै, अन्यथा कला संस्कृतिक लेल जिला मुख्यालयसँ पंचायत स्तर तक एकहि छै। ओतऽ नाटकक मंचन कोना होइत छै? ओतऽ नाटकक मंचन हेबामे कोन-कोन बाधा छै? ओतऽ समाजमे नाटकक लेल जन सामान्यक हृदयमे केहन सम्मान छै ? नाटक एखनो पुरूखक खेल छिऐ, महिला लेल वर्जे अछि। लोककैं जीवनक आन छोट पैघ समस्यासँ कम महत्वपूर्ण छै। एहि सभ बातकैं कोनो लेखमे कहबाक बदला नाटकक दृश्यमे, नाटकक पात्रक मुहैं बहुत स्वभाविक रूपें कहने छथि।

नाटकमे कोनो कथा नहि छै। नाटक आरम्भ होइत अछि एकटा गाममे ग्रामीण लोकनि द्वारा एकटा नाटक करबाक तैयारीक दृश्यसँ। गाममे एकटा शहरी नाटकक प्रसिद्ध निर्देशक आ संयोजक आयल छथि, नाट्यप्रेमी लोकनि हुनका नाटकक निर्देशन आ संयोजनक भार दऽ दैत छथिन। एकटा नाट्य प्रेमी ओहि आग्रहकैं स्वीकारि लैत छथि। फेर शुरू होइत अछि नाटकक पूर्वाभ्यासक समस्यासँ अकच्छ निर्देशकक मनोभावक प्रदर्शन। किछु पात्र आबि गेल रहैत छथि। किछु महत्वपूर्ण पात्र अपन आदतिक अनुसार बहुत बिलम्बसँ अबैत छथि। जाहिलेल बहुत बाताबाती होइत अछि।

फेर सभसँ सास्वत समस्या उठैत अछि महिला पात्राक। जी हँ, एखनो मिथिलाक ग्रामीण नाट्य प्रदर्शनमे पुरूखे रंग-रूप बदलिकऽ महिला पात्र बनैत अछि। से ओहू गाममे पहिनेसँ सीता आ हुनकर सखीक पात्रा दूटा पुरूखकैं करबाक रहनि। एहना अवसरपर बेशीतर ई होयत छै ओ पात्रा महिला बनबासँ मुकड़ि जाइत छै,सैह नाटकोमे होइत छै। पहिने दोसर पुरूखकैं तैयार कराकऽ काज चलेबाक प्रयास होइत छै परन्तु ताहिमे सफल नहि भेलापर निर्देशकक पत्नी समस्याक समाधान लेल स्वयं गामक एकटा पुतहुकैंमहिला पात्र बनेबाक प्रस्ताव दैत छथि।

एतय नाटक अपन मूल लक्ष्यमे अबैत अछि। जाहि तरहें कहियो कालिदास राजाकैं यत्र-तत्र मनमौजीसँ विवाह कऽ लेबाक प्रथाकैं टोकने रहथि तहिना नाटकक माध्यमे नाटककार मैथिल ग्रामीण समाजक दोहरी चरित्रकैं सफलतापूर्वक ललकारिक समाधान दैत छथि।
ग्रामीण लोकनि अपन पत्नीकैं मुखियाक चुनावमे ठाढ़ करा अङने-अङने, दलाने-दलान मतक लेल बुलबैत छथि आ आब तऽ आङन-बाड़ी सेविका आ गामक पाठशालामे शिक्षिका बनेबाक लेल बेहाल रहैत छथि, हुनका मंचपर पात्र बनऽमे मर्यादा, सभ्यता आ संस्कृति मन पड़ैत छनि। नाटककार बहुत नीक जेकाँ तर्कक वार्ता करा नाटकमे भावहु भैंसुरक

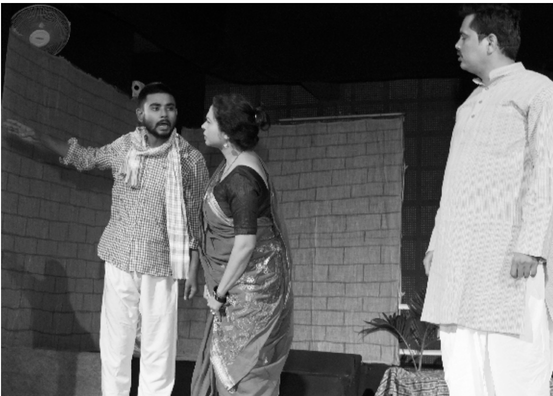
बीचक बनावटी मर्यादाकेँ पर्यन्त सफलतापूर्वक समाप्त करैत छथि।

तहिना पात्रगणकेँ नाटकक पूर्वाभ्याससँ बेशी आवश्यक महींस दुहबाक बेर भऽ जायब सन सन छोट छोट घटनाक समावेशसँ नाटक दर्शकक आँखि देने सोझे मन मस्तिष्कमे पैसि जाइत छै। तहिना युवा कलाकारकेँ नाटकक प्रदर्शन हेतु मंच सामग्रीक निर्माण आ ओरियान करबाक ललक, वेश भूषाक प्रति सजगता आ कलाकारक आत्मा जखन नाटकसँ जुटि जाइत छै तऽ ओ कोना अपना दिससँ स्वतः-स्फुर्त सम्वाद जोड़ऽ लगैत अछि जकरा आजुक नाटककार इम्प्रोभाइजेसन कहैत छथि, केर बहुत सहज प्रदर्शन होइत छै।

तहिना नाटकक प्रौम्पटर अपनामे कोना मशगुल रहैत अछि आ कोनो पात्राक द्वारा किछु छोड़लापर, उण्टा-पुण्टा बजलापर तमसा जाइत अछि ।

तहिना बीच-बीचमे आवश्यकतानुसार सीताक दुर्दशापर विभिन्न कविक कविता आ गीतक समावेश जतऽ एक दिस नाटकक कथ्यकेँबल दैत छै ओतहि दर्शककेँ नीक कविताकेँ व्याख्या सुनबाक अवसर भेटैत छनि।

सभसँ पैघ बात जे नाटककार सद्यः देखबैत छथि जे एकटा निर्देशक जे ग्रामीण रंगमंचक संयोजक, अभिवावक आ संगठनकर्ता सभ किछु होइत अछि ओ नाट्य प्रदर्शनक सभटा समस्याकेँ अपना स्तरसँ समाधान करैत अछि। ओ समस्यासँ घबराइत नहि अछि, समस्या ओकरा विचलित नहि



नाटक ''नदी गोंगियाल जाय'' के एक दृश्य मे आदर्श वैभव, प्रतिभा मिश्र आ क्षमाकान्त ठाकुर

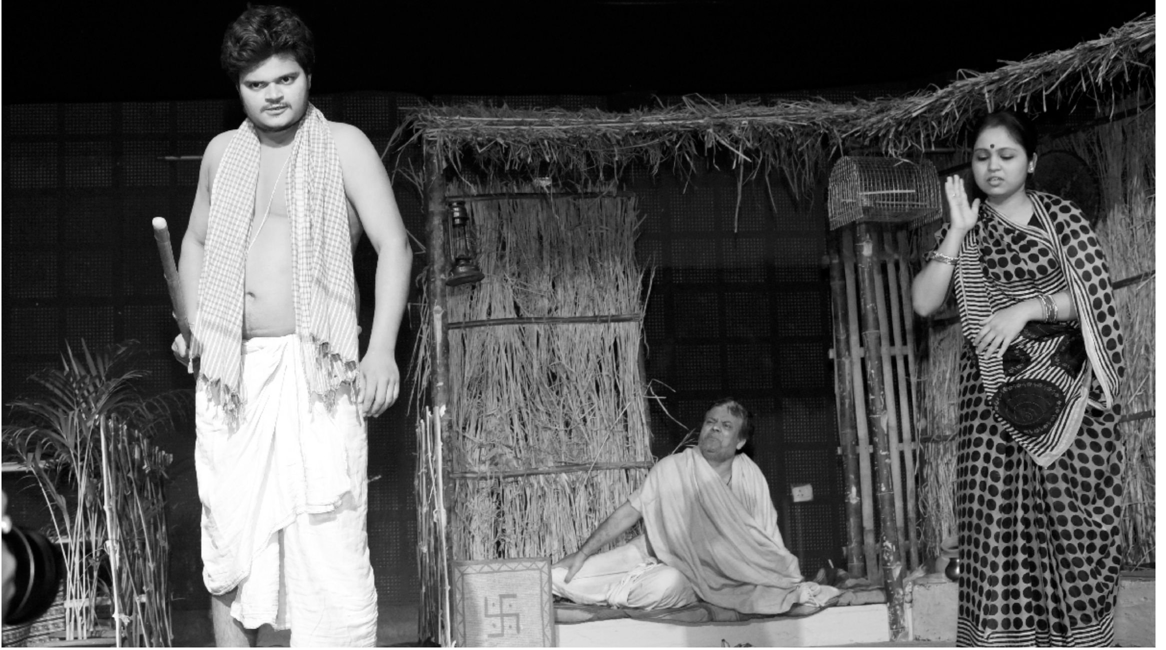
करैत छै। तें ग्रामीण नाटकक लेल एकटा सशक्त व्यक्तित्वक आवश्यकता होइत छै।

नाटकक अन्तमे, उत्तर रामचरित मानसक ओ अंश जखन लव कुशक द्वारा रामक अश्वमेध यज्ञक घोड़ा रोकबाक कारणे सीताक सामना रामसँ होइत छनि आ सीता अन्ततः अपन माय धरतीमे समाहित भऽ जाइत छथि, केर दृश्यक अभिनय देखाओल जाइत अछि। सीताक पक्षमे किछु गम्भीर, विचारोत्तेजक सम्वाद अबैत अछि। फेर ओहू सम्वादक सार्थकता हेतु पात्रक मुहें समीक्षा कराओल जाइत छै। साहित्यक दृष्टिएँ आइ दू हजार वर्खसँ सीताक प्रति रामक भेल व्यवहार आ हुनकर पृथ्वीमे समाहित होयब बहुत विवादास्पद आ चर्चित होइत रहल अछि। समाजक वर्तमान परिदृश्यमे ओ आओर विवादित अछि। ओना हमर मन्तव्य अछि जे रामकथाक मूल लेखक बाल्मिकी द्वारा जखन ओ नहि लिखल गेल छल आ बादमे भवभूति कोनो कारणे उत्तर रामचरित लिखिकऽ विवाद ठाढ़ कयने रहथि, ताहिकेँ आजुक समयमे मथब बहुत उचित नहि।

ओना नाटक जाहि भाव आ सामाजिक परिवेशक आलोचना करैत आरम्भ होइत अछि आ दर्शककेँ सफलतापूर्वक अपन बात बुझा लैत अछि तकर बाद हठात हजारो वर्खक पुरान आस्था आ नैतिकताक सन्दर्भमे घिसियाएब बहुत उचित नहि लगैत छै। राम ,लक्ष्मण, लव-कुश आ बाल्मिकीक वास्तविक उपस्थितिक बदला दूनू महिला पात्र, एक दू पुरूख पात्रक बीच चर्चामे सीता प्रसङ्गक आलोचना होइतय तऽ कने आओर सामाजिक परिस्थितिक विश्लेषण भऽ सकितय।

ओना नाटकक पोथीसँ जे सूचना भेटैत अछि ताहि हिसाबें नाटकक अन्ते पहिने लिखल गेल होयत कारण एकर मूल नाम 'प्रायश्चित छल। परंच बादमे भंगिमा संस्था लगातार मंचनक क्रममे बहुत रास परिवर्तन ,सुधार आ जोड़-घटावक द्वारा एहि नाटककेँ मैथिली नाटकक परिचय लेल एकटा विशिष्ट आलेख बनबा देलक।

आब किछु कमी जे हमरा अभरल अछि ताहूक चर्चा करब हम आवश्यक बुझैत छिऐ। सभसँ पैघ जे नाटकमे दू महिला आ बारहटा पुरूष पात्र मिलाकऽ कुल चौदहटा पात्रकेँ



नाटक ''नदी गोंगियाल जाय'' के एक दृश्य मे रंजन ठाकुर, मोद नारायण झा, आ प्रियंका झा

लऽ कऽ भंगिमा सन स्थापित, संगठित संस्थाएटा कऽ सकैत अछि, ग्रामीण आयोजक जिनक दूर्दशापर पूरा नाटक केन्द्रित अछि ,लेल ओतेक पैघ पात्रक नियन्त्राण बहुत कठिन छै।

दोसर पूरा नाटकक परिकल्पना आधुनिक नाट्य-प्रदर्शनक परिपाटी जाहिमे दृश्यान्तर प्रकाश व्यवस्थासँ नियन्त्रित रहैत छै आ मंचक सामग्री, ओकर दृश्यानुसारें आयोजन कलाकार द्वारा बहुत फुर्तीसँ कऽ लेल जाइत छै, से ग्रामीण रंगमंचमे पर्दाक बीच कठिन छै।

गीत आ कविताकेँ प्रस्तुति हेतु पूर्वसँ नीक जेकाँ ध्वन्याङ्कन कयल स्वरकेँ नेपथ्यसँ उचित समयपर बजेबाक दुरूस्त व्यवस्था चाही।

चारिम कमी अछि समुचित हास्य आ विदूषकक अभाव। गम्भीर नाटकक लेल इहो एकटा अनिवार्यता छै जे विदूषक द्वारा नीक हास्य उपस्थित कयल जाए।यद्यपि तीन चारिटा पात्र आपसमे वाद-विवादक क्रममे बहुत सहजतासँ हास्यकेँउपस्थित अवश्य करैत छथि परन्तु दृश्यक मूल वातावरणमे ओ दबिकऽ रहि जाइत छै।

एहि सभ विन्दुक विचार एकदम सुदूर, सुविधाहीन नाट्य दलक स्थितिकेँ ध्यानमे राखि कऽ रहल छी, अस्तु पाठक ओहि सभ बातक विमर्श खास दृष्टिएँटा करथि।

मुदा वर्तमान रंगमंचक बीच ई मैथिलीक एकटा सशक्त आ सहज आलेख छी, जे शत प्रतिशत समाजक विश्लेषण करैत अछि आ 'नाटक' शब्द केँ परिभाषित करैत अछि।

हमरा लोकनि केँ आब भौतिक बटुक भाइक सामना होयब भगवती समाप्त अवश्य कऽ देलनि मुदा 'सुनू जानकी' जखन जखन पढ़ब, जखन कखनो मंचित होइत देखब निश्चित रूपसँ हुनकर नाटकक लेल गँहीर दृष्टि, मैथिली नाटटक मार्गक बाधाक प्रति हुनकर सजगता स्वतः अपना आगाँ ठाढ़ पयबनि।

मैथिली नाटकक संरक्षक श्रीमान छत्रानन्द सिंह झा नहि नहि बटुक भाइ हँ बटुक भाइ केँ भंगिमाक सभ सदस्य, कलाकार आ सहयोगीक संग हमरो शत् शत् श्रद्धांजलि।



अशोक
प्रसिद्ध मैथिली कथाकार



सूनू जानकी मे पुछैत जानकी

छत्रानन्द सिंह झाक नाटक अछि 'सूनू जानकी'। ई नाटक हुनक लिखल नाटक 'प्रायश्चित'क पुनर्सृजन थिक। 'प्रायश्चित' नाटक वर्ष 1984 मे मंचित भेल रहय। हम देखने रही ओ नाटक। एम्हर 'सुनू जानकी' सेहो देखलहुँ अछि। 'प्रायश्चित' सँ सूनू जानकी' मे बहुत परिवर्त्तन भेल अछि। साफे बदलि गेल अछि नाटक। एहि बीच मे जखन 'सूनू जानकी' पोथी पढ़लहुँ त' ओहि संग किशोर कुमार झाक 'यात्रा कथा' पढ़लहुँ। ई यात्रा कथा प्रायश्चित सँ सुनू जानकी धरिक यात्रा कथा थिक। किशोर लिखलनि अछि जे, जहि मैथिली मे नाटक लिखलयलाक बाद तुरत-फुरत मे मंचन आ तत्पश्चात् प्रकाशनकक बाट ध' लैत अछि-ओही मैथिली मे ई नाटक 'सूनू जानकी' लगातार अठारह वर्ष धरिक अनवरत चिन्तन-मनन आ लेखन-पुनर्लेखनक बाद आइ एहि रूप मे सोझाँ आबि रहल अछि। अठारह वर्ष, एक नाटक एके नाटक, एके संस्था, दू निर्देशक, पाँच नाट्य समारोह। महोत्सव आ तकरबाद पूर्ण होइत अछि-रेडियो प्ले 'प्रायश्चिज' क मंच नाटक प्रायश्चित सँ सूनू जानकी बनबाक प्रक्रिया। एहि प्रक्रियाक विस्तार सँ वर्णन केने छथि किशोर। जहिना ई यात्रा कथा महत्वपूर्ण अछि तहिना ई लेखन सेहो महत्वपूर्ण अछि। किशोर के पढ़ैत फेर सँ ई बात मोन मे बसि जाइत अदिक जे नाटक एक सामूहिक कला थिक। से नहि केवल एहि कारणे जे लिखब सँ मंचन धरि मे बहुत लोक सम्मिलित रहैत छथि अपितु अहू कारणे जे एक नाटकक पूनलेखन मे सेहो ओहि सँ सम्बद्ध लोकक भूमिका आ सहयोग भ' सकैत अछि।

संगहि ई सम्पूर्ण आयोजन आ नाट्यलेखन, ओकर प्रस्तुति एक पूनर्सृजन भ' जाय।

एम्हर हिन्दी मे फणीश्वरनाथ रेणुक कथा सभ के आजुक कथाकार सभ पुनसृर्जन केलनि अछि आ से कथादेश मे छपल अछि। मुदा नाटक मे आ से मैथिलीमे ई अमूतपूर्व घटना थिक।

'प्रायश्चित' नाटक भंगिमा पत्रिकाक अगस्त 1987 क अंक मे छपल अछि आ सूनू जानकी पोथीक रूप मे 2007 मे आयल अछि। हम सूनू जानकी संग 'प्रायश्चित' के सेहो पढ़ैत छी। तखन बुझाइत अछि जे कतेक ओ कोना बदलल अछि नाटक। कोना वर्त्तमान समय सँ ओकरा जोड़ि देल गेल अछि।

'प्रायश्चित' मे जे घटना अछि से दण्डकारण्य मे महर्षि वाल्मीकिक आश्रम मे घटित होइत अछि। एहि नाटकक जे समय अछि से रामायाणकालक समय थिक। ई जे नाटक अछि से अनेक पोथीक आधार पर लिखल गेल अछि। लेखकक अनुसारें से 'विचार सँ, तथ्य सँ ओ शब्द सँ सेहो' अछि। मुदा सुनू

वर्त्तमान मे सीता आ जानकी के विभिन्न रूपमे देखल जाइत अछि। सीता-विमर्थ चलि रहल अछि। दू तरहक विचारधारा मे लोक बँटल अछि। जेना नाटको मे बँटि गेल। एक दल सीता के देवी मानि हुनक पूजा करैत अछि।

दोसर दल सीता के अपन बहीनि मानि राम के प्रश्नांकित करैत अछि। तेसर दल स्त्री-समाजक अछि जे सीता क पराभव सँ अपना के जोड़ि क' देखत अछि आ ओकर प्रतिकार लेल मुखर भ' रहल अछि। एही संग नाटकक जीवन आ जीवनक नाटक भ रहल अछि। जीवन एक रंगमंच थिक, सेहो साबित भ' रहल अछि।



जानकी' क बहुलांश कल्पना पर आधारित अछि। ओहि मे वर्त्तमान सामाजिक यथार्थ अछि। गामक परिवेश अछि। मैथिल स्वभाव अछि। सामाजिक यथार्थक द्वन्द्व अछि। ई नाटक एक रिहर्सलक रूप मे एक गमैया दलान पर होइए सम्पूर्ण नाटक रिहर्सलेक रूपमे समाप्त भ' जाइत अछि। तेँ ई नाटकक रूप सेहो बदलल अछि। समय सेहो बदलल अछि। विचार सेहो बदलल अछि।

'प्रायश्चित' मे नाटकक समापन सीताक धरती मे चल गेलाक बाद विह्वल, चकित आ लज्जित रामक पश्चाताप सँ होइए। ई राम मैथिलीक आगू नतमस्तक राम छथि। प्रायश्चितक आगिमे झड़कैत राम छथि। मुदा 'सूनू जानकी मे जानकीक अभिनय करैत भौजी पाताल मे प्रवेश करबा सँ अस्वीकार करैत छथि। ओ बजैत छथि,

'हम नहि मरब। सीता नहि मरती। ई पुरूष- प्रधान समाज नारी शक्ति केँ कहियो प्रतिष्ठित ने होम' देत।' भौजी ई बिसरि जाइत छथि जे ओ सीताक अभिनय क' रहल छथि। हुनका नाटक करबाक छनि। ई नाटक थिक। ओ नाटक के अपन जीवन ओ वर्त्तमान सँ जोड़ि क' देख' लगैत छथि। दोसर स्त्री पात्र कनियाँ सेहो हुनका पराजित नहि हेबाक लेल कहैत छथिन। हमरा मोन पड़ैत अछि जे भंगिमाक एक नाटक में अभिनेत्री स्वाती सिंह नाटकक एक दृश्यमे कनबाक अभिनय करैत ठीके कान' लागल रहथि। कानब बादो मे बन्दे ने होइन। वस्तुतः ओ ओहि क्षण अभिनय मे एतेक डूबि गेली जे ई बिसरि गेली जे ई नाटक थिक। ओ अभिनय क' रहल छथि। तहिना भौजी सेहो बिसरि जाइत छथि। ओ सीता संग अपना के जोड़ि लैत छथि। वर्त्तमान स्त्री-समाजक अस्मिता सँ जोड़ि क' देख' लगैत छथि। ओ कहैत छथि जे, आजुक सीता धरती मे नहि समायत। ओकरा अपन अधिकार लेल संघर्ष करबाक छैक।' इतिहास-पुराणक कथा के एना बदलि देबाक हुनक निश्चय सँ नाटक मण्डली दू भाग मे बंटि जाइत् अछि। प्रौढ़ दल आ युवक दल मे। प्रौढ़ दल मंच सँ चल जाइत अछि मुदा युवक दल भौजीक संग दैए। कहैए, काकी, नाटक हेतै। अवश्य हेतै। अहाँ जेना कहैत छिऐ तहिना हेतै।'

आजुक सीता धरती मे नहि समायत। ओकरा अपन अधिकार लेल संघर्ष करबाक छैक।'

अन्ततः भौजी कहैत छथि दर्शक सँ 'शास्त्र पुराणक नाटक मंच पर केनिहार कलाकार तँ भागि गेलाह। हम ओहि नाटकक ने, जीवन के नाटकक कथा पुछै छी-की आजुक सीता ओहिना प्रताड़ित-पलायित होइते रहती.......?' नाटकक समापन भौजीक एही प्रश्न सँ होइत अछि। हमरा एही संग मोन पड़ैत अछि हरिमोहन झाक उपन्यास कन्यादानक अंतिम पंक्ति-एकर उत्तरदायी के? बुच्चीदाइक पराभव लेल उत्तरदायी के? उत्तर अछि-समाज। सीताक अभिनय करैत भौजी सेहो समाजे सँ प्रश्न करैत छथि। ओ सीता माने एक स्त्री नहि, सम्पूर्ण स्त्री-समाज के जोड़ि क' प्रश्न पुछैत छथि। ओ सभ सत्री के सीता वा जानकी मानैत छथि। तें हुनक प्रश्न सीता वा जानकीक प्रश्न बनि जाइत अछि।

वर्त्तमान मे सीता आ जानकी के विभिन्न रूपमे देखल जाइत अछि। सीता-विमर्थ चलि रहल अछि। दू तरहक विचारधारा मे लोक बँटल अछि। जेना नाटको मे बँटि गेल। एक दल सीता के देवी मानि हुनक पूजा करैत अछि। दोसर दल सीता के अपन बहीनि मानि राम के प्रश्नांकित करैत अछि। तेसर दल स्त्री-समाजक अछि जे सीताक पराभव सँ अपना के जोड़ि क' देखैत अछि आ ओकर प्रतिकार लेल मुखर भ' रहल अछि। एही संग नाटकक जीवन आ जीवनक नाटक भ रहल अछि। जीवन एक रंगमंच थिक, सेहो साबित भ' रहल अछि।

छत्रानन्द सिंह झा एहि सम्पूर्ण प्रसंग मे अन्ततः मोन पड़ैत छथि। जीवनक रंगमंच पर ओ अपन अभिनय क चल गेला। मुदा एही संग प्रायाश्चित सँ सूनू जानकी' धरिक यात्रा कथा मे हुनक मानस यात्रा के नहि बिसरबाक चाही। एक व्यक्तिक भीतर सामूहिकताक प्रति रचनात्मक निष्ठा की होइत हैक, से ओ देखा गेल छथि।



हमर सबहक 'बटुक भाय'

श्रीमति आशा चौधरी
मैथिली कम्पीयार/नाटक
आकाशवाणी, पटना



मिथिला के चमकैत विभूति
परम यशस्वी पर उपकारी
आब परंच गोलोक सिधारल
मुदा छथि मैथिल हृदयक वासी

बात कहै छी निक समय केँ
मात्र रेडियोक तखन जमाना छल
चैनल सब तहिया पाछाँ छल
पटना रेडियोक चौपाल कार्यक्रम चर्चित
जाहि मे 'बटुक भायक' नाम बढ़ल छल

ताहि समय हुनक बोली सुन' लय
टोनगर संवाद सुनि हर्षित होम' लय
गाम गाम रेडियो लग बैसय सांझे
सुनि विभोर मन सोचय हुनके लय

फैन कतेको मिथिलांचल मे
हिनकर एक झलक लय दौड़य
दर्शन क' क' कृत कृत भ' क'
अपन हृदय बीच हिनका बसाबए
हिनका लग सँ हटय ने चाहय

गौर वर्ण तेजस्वी आभा
पान गाल तर मुस्की सादा
छत्रानन्द सिंह झा असल नाम छल
रेडियो नाम बटुक भाय मानल

मैथिली साहित्यक मर्मज्ञ सुज्ञाता
कुशल वक्ता कम्पीचर ओजस्बी
लिखलनि कतोक नाटक, कविता, पोथी

रंग जमौलक नाटक 'सुनू जानकी'
अपना हिस्से ई लेलक प्रसिद्धि

भंगिमा सन सुन्दर संस्था बनौलैन्ह
एक स' एक नाटक खेलेलैन्ह
नाटकक जादू सौंसे पसरल
प्रसिद्धि प्रेम आ' सम्मान कमौलैन्ह

थोड़ेक बरस हमहूँ हिनका संग
रेडियोक भारती आ चौपाल केलौं
दरम्यान ताही दिन मे हिनकर
खूब प्रेम सम्मान हम पौलौं
जेठ भायक कमी बिसरलौं

केहन कारी दिन 2022 सितम्बर
छुटि गेलनि संसार आ' ई देह जे नश्वर
जा' छरि रहत मैथिली रंगमंच, नाटक
बिसरत नहि कहियो अहाँ केँ जनमानस
करी नमन, दियौ आशीष पसरय सबके यश ।।



समीर कुमार

अभिनेता/नाटककार

कला निकेतन, रतुपार (झंझारपुर)

मो.-9304473869



रंगमंचक सफर मे मैथिली रंगमंच

-भारतीय संस्कृति विश्वक सब सँ पुरान आ समृद्ध संस्कृति मे सँ एक मानल जाइत अछि। एकर हरेक पक्ष एकर खूबसूरती के देखार करैत अछि। भारतीय रंगमंच भारतीये संस्कृति केर हिस्सा थिक। भारत के शास्त्रीय रंगमंचक पहिल रूप संस्कृति रंगमंच छल।भारत मे रंगमंचक एकटा नमहर आ भरल-पुरल परंपरा अछि जे देशक पाबैन-तिहार आ मौसमी उत्सव केर निकटता सँ संबंधित अछि।भारतीय खिस्सा-पिहानी,साहित्य आ कलाक विभिन्न रूप के भौतिक रूप मे प्रस्तुत करबाक लेल रंगमंचक निर्माण कएल गेल।रंगमंच नाट्यकला केर प्रस्तुति लेल बड बेसी महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि।

रंगमंच दू टा शब्द रंग आ मंच केर मेल सँ बनल अछि। श्य के प्रभावी बनेबा लेल दिवार, छत आ परदा पर चित्रकारी'क संगहि वेष-भूषा आ सज्जा लेल विभिन्न रंगक प्रयोग कय मनमोहक बनाओल जायत छैक, जहँ कि दर्शक के सुविधा हेतू फर्श सँ उच्च एकटा तल के निर्माण कएल जाइत छैक जे मंच कहैत छैक।

अहि तरहेँ रंगमंच सजाओल जाइत छैक जाहि पर जहँ कोनो प्रस्तुति खास क नाट्यकला केर प्रस्तुति होइत छैक त ओ विशेष प्रभाव दर्शक दीर्घा पर छोड़ैत छैक।

नाट्यकला केर उत्पत्ति दैवी छैक।दुःखरहित सतयुग बित गेला पर त्रेतायुग केर प्रारम्भ मे देवता लोकनि स्रष्टा ब्रह्मा सँ मनोरंजनक कोनो एहन साधन उत्पन्न करबाक गोहैर केलन्हि जाहि सँ देवता लोकनि अपन दुःख बिसैर आनंद प्राप्त क सकैथ।स्रष्टा ब्रह्मा देवता लोकनि के मनोरंजनार्थ जे साधन उत्पन्न कयलन्हि ओ नाट्यकला कहाओल।

भारत मे रंगमंचक इतिहास बड पुरान अछि। मानल जाइत अछि जे नाट्यकलाक विकास सबसँ पहिने भारते मे भेलैक। ऋगवेदक कतिपय सूत्र मे यम आ यमी, पुरुरवा आ उर्वशी आदि मे किछू संवाद छैक। अनुमान कएल जा रहलै यै कि अहि संवाद सँ प्रेरणा ग्रहण कए नाटक केर रचना भेल हेतै।

भरत मुनि नाट्यशास्त्र मे नाट्य शब्दक प्रयोग केवल नाटक के रूप मे नयि क के व्यापक रूप मे कएने छथि जाहि मे रंगमंच,अभिनय,नृत्य,संगीत,रस, वेश-भूषा, रंगशिल्प, दर्शक सब समाहित अछि।

सीता वंगा केर गुफा के देखला सँ पुरान नाट्यमंडप केर स्वरूपक किछु अनुमान कएल जा सकैत अछि।वैह नाट्यमंडप वर्तमान समय मे रंगमंचक रूप ल नेने अछि।

हिंदी मे अव्यवसायिक रंगमंचक सूत्रपात 1868 ईसवी मे बनारस थियेटर संग भेल।1884 ईसवी मे बनारस मे नेशनल थियेटरक स्थापना भेल।

ओना रंगमंच केर जहाँ तक बात छैक त ग्रामीण रंगमंच बड समृद्ध छल, अखनो अछि। कतेको गाम 100 वर्ष सँ लगातार नाटकक मंचन करैत आबि रहल अछि, मुदा आर्थिक लाचारी, शहर दिश पलायन आदि भेला सँ ग्रामीण रंगमंच प्रभावित भेल अछि इ सत्य बात थिक। युवा वर्ग आ अभिभावक लोकनि के अहि दिशा मे चिंतित होमय पड़तन्हि। संस्कृति बचबै मे ग्रामीण रंगमंचक योगदान सब सँ बेसी अछि।



भारतेंदु के 'अंधेर नगरी'क पहिल मंचन नेशनल थियेटर मे भेल छल।हिंदी रंगमंचक विकास मे भारतेंदु नाटक मंडली(1906ईसवी)केर भूमिका महत्त्वपूर्ण मानल गेल अछि।

जाँ बिहारक कलापरिदृश्यक चर्चाकएल जाय त' एकटा बात स्पष्ट रुपे कहल जा सकैत अछि जे राष्ट्रीय आ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आइ धरि जतेक बिहारक लोक कला चर्चित अछि ओतेक आधुनिक कला नयि।आ जँ लोककलाक चर्चा हुए तहँ जँ मैथिली केर चर्चा नयि होए त बुझू बेमानी केनाय भेल।मैथिली केर चर्चा भेल त बुझू मैथिली नाटक केर चर्चा हेबे करत।

मिथिला मे रंगमंचक अभाव के कारण वा नाटककार मे मैथिली नाटक लिखबाक साहस केर अभाव के कारने उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध धरि मैथिली नाटक केर रचनाक सुपुष्ट परंपरा नयि बनि पाओल।उन्नीसवीं शताब्दी केर अंत मे किर्तनियाँ नाटक के नाटकीय गरिमा देबाक चेष्टा विद्वान लोकनि कएलन्हि।मान्यता छैक जे अहि मण्डली के सदस्य के नाटक के कथोपकथन केर वाचन शिक्षा आ अभिनयक शिक्षा सेहो देल जायत छल।हास्य परिहास के लेल विपटा के आगू आनि क मैथिली मे हास्य व्यंग्यक प्रस्तुति कराओल जायत छल।

मैथिली नाटकक बढ़ैत डेग के देखैत इतिहासकार लोकनि मैथिली नाटक के विकास परंपरा के खंगहारलैथ आ ओहि पर जहँ गहन अध्ययन आ तर्क वितर्क भेलैक त अहि निष्कर्ष पर पहुँचला कि मैथिली नाटक केर रचना मिथिला मे बीसवीं शताब्दि मे भेलैक।मुदा मध्यकाल मे आसाम आ नेपाल मे मैथिली नाटक केर रचना भेल इहो प्रमाणित अछि।

नाटक जनसामान्य लेल उपयोगी काव्य विद्या थिक जकर मूल कारण इ अछि जे ओ दृष्यकाल मे होइत अछि।इ एकटा एहेन सामाजिक कला थिक जाहि मे समकालिन युग चेतना अभिव्यक्त होइत अछि। नाटक समाजक कुरीति आ विद्रूपताक अनुकृति थिक। जनमानस अहि दर्पण मे अपन छाँह देखबाक लेल उत्सुक रहैत छथि, तैं एकर रचना मे समयानुकुल परिवर्तन आवश्यक। नाट्य संस्कृति सामाजिक जीवन प्रक्रिया जँका शीर्ष आ गर्त पर अबैत जाइत रहल अछि। नाट्य संस्कृति मे लोक नाट्य कला केर योगदान बड बेसी अछि। समकालिन सामाजिक आ धार्मिक स्थिति केर चित्रण सँ युक्त लोक नाट्य संस्कृति नयि केवल सामाजिक रहन-सहन आ लोकजीवन सँ परिचय करबैत अछि अपितु अपन विरासत केर मानचित्र सेहो देखाबैत अछि।

आधुनिकता जेना जेना अबैत गेलै सब चीज मे परिवर्तन आबय लगलैक। मैथिली नाटक अहि सँ वंचित कोना रहितै।जनता केर भाषा आ नाटक केर भाषाक अंतर बढ़य लगलै परिणामस्वरूप लोकजीवन आ नाट्य संस्कृतिक भाषागत संबंध डगमगाय लगलै।पहिने लोक नाटक देखबाक लेल कोसक कोस दूरी लाँघि गंतव्य तक पहुँचि जाइथ।भरि-भरि राति आकाश तर मे भुइँये मे पलथि मारि नाटकक आनंद सागर मे गोंता लगबथि।

रामलीला,रासलीला,शीत-वसंत,

राजा सल्हेश,आल्हा-रूदल आदि नाटकक क्रेज एहन छल जे पुछू जुनि।शनैःशनैः मैथिल बहुल क्षेत्र मे हिंदी नाटकक प्रभाव बढ़यि लगलैक।दर्शक दु फांक भ गेलाह।किछु समर्थन त किछु विपक्ष मे।महिला वर्ग बेसी खिसिया गेलीह।साक्षरता दर कम हेबाक कारने भाषाइ दिक्कत बुझना गेलैन्हि। नाटक चित्त पर सँ उतरय लगलैन्ह हुनका सब के।कतौ जँ नाटक होय त लोक नाटक देखै लेल नै नाच देखै लेल जाय लागल। ग्रामीण रंग-मंच पर नाटकक बीच मे नटुआ नाच नचेबाक प्रथा छेलैक।नीरस वातावरण बनि गेल छेलैक।ग्रामीण रंग-मंच केर पतन शुरू भ गेल छेलैक।दर्शक नव चीज देखबाक लेल आतुर छलाह। कालांतर मे मैथिली नाटककार भारतेंदु केर नाट्य परंपरा सँ प्रभावित भ शास्त्रपुराण सँ इतर आनो-आन विषय पर नाट्य वस्तुक खोज आरम्भ कएलन्हि। आगू बढला जीवन झा जी। विद्वान लोकनि के मत छन्हि जे आधुनिक मैथिली नाटकक प्रवर्तक जीवन झा जी छथि।

''जा धरि गामक पान के गुमती आ चाहक दुकान पर राजनीतिक चर्चाक जगह मैथिली नाटकक चर्चा नै हुए लागत ता धरि संघर्ष जारी राखय पड़त।''

1904 ईसवी मे पंडित जीवन झा जी 'सुंदर संयोग' नाटक लिखलन्हि। तत्पश्चात 1906 ईसवी 'नर्मदा सट्टक'

आ 1908 ईसवी मे 'सामावती पुनर्जन्म' नाटक लिखलन्हि। हिनकर अतिरिक्त पंडित लाल दास, मुंशी रघुनंदन दास, आनंद झा,जीवनाथ झा,दामोदर झा प्रभृति लोकनि विविध नाटक केर रचना कएलन्हि।इ तथ्य सहज रुपे स्वीकारात्मक अछि जे मानव जीवन सँ अंतरंगता स्थापित करबाक जे उत्साह हिंदी नाटककार मे देखैत छल ओहन आतुरता मैथिली नाटककार लोकनि मे नयि एलन्हि।सामाजिक दुर्दशा, राजनीतिक त्राशदी, जीवनक विकृति आदि आदि चीज मैथिली कविता, कहानी,उपन्यास आदि मे आबि गेल छल मुदा मैथिली नाटककार लोकनि के वेद-पुराण सँ बहरेबाक मोने नयि करैत छलन्हि। बाद मे आबि क मुंशी रघुनंदन दास(मिथिला नाटक), इशनाथ झा(चिनीक लड्डू), गोविंद झा(बसात) नाटक सँ प्रेरणा ल के मैथिली नाटककार पूर्ण साहसिकता सँ जन-जीवन मे नाट्य तत्व खोजनाय शुरू कयलन्हि।

सन 1960 के बाद मैथिली नाटककार मे जे अपन अस्मिता कायम कयलन्हि ओहि मे सुधांशु शेखर चौधरी, महेंद्र मलंगिया, गंगेश गुंजन,उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', अरविंद अक्कू आदि प्रमुख नाम थिक। रंगमंच पर जे मैथिली नाटक केर सुखार परि गेल छल तकरा दूर करबा मे हिनकर सबहक नाम सदिखन आगू रहत खास क मलंगिया जी के। इ अपन नाटक सँ एक बेर पुनः दर्शक के घर सँ रंगमंच धरि खिंची क' अनबा मे सफल भेलाह। ओ अपन नाटकक लेखन नव दृष्टिकोण सँ कयलन्हि, जाहि मे शोषित, उपेक्षित, दलितक संग-संग बेरोजगारी आदि के केंद्र मे राखि क' नाटकक कथा वस्तुक निर्माण कएल जकर बड खगता छेलैक।सुधांशु शेखर चौधरी,अरविंद अक्कू,नचिकेता जी,गुंजन जी सन नाटककार मैथिली नाटक के जन-जन तक पहुँचबय मे वा इ कहियौ जे मैथिली नाटक के दशा आ दिशा देखबै मे अगिला कतार मे ठाढ़ छथि। नवतुरिया मे आदर्श वैभव केर नाटक नव कथानक ल के हमरा प्रभावित केलक अछि।

भफाइत चाहक जिनगी,लेटाइत आँचर, जुआयल कनकनी, ओकरा आँगनक बारहमासा,काठक लोक,अंतिम सत्य,फुटानी चौक सन-सन बहुतो आरो नाटक मे नव नव कथ्य एवं शिल्पक प्रयोग भेटैत अछि,जे मैथिली नाटक के नव आयाम देलक अछि।

ऊपर वर्णित जाहि प्रयोगधर्मी नाटककार लोकनि के चर्चा हम केलौंह अछि हुनकर पुछ आर बेसी तहँ भ जाइत अछि जहँ हुनकर किताब प्रेस सँ बहराइत छैक आ गाँव घर,शहर मे नाट्य संस्था सब बनयि लगैत छैक।

ओना रंगमंच केर जहाँ तक बात छैक त ग्रामीण रंगमंच बड समृद्ध छल, अखनो अछि। कतेको गाम 100 वर्ष सँ लगातार नाटकक मंचन करैत आबि रहल अछि, मुदा आर्थिक लाचारी, शहर दिश पलायन आदि भेला सँ ग्रामीण रंगमंच प्रभावित भेल अछि इ सत्य बात थिक। युवा वर्ग आ अभिभावक लोकनि के अहि दिशा मे चिंतित होमय पड़तन्हि। संस्कृति बचबै मे ग्रामीण रंगमंचक योगदान सब सँ बेसी अछि। आब संसाधन, तकनीक सब गामो मे उपलब्ध अछि। नाटकक किताब सेहो प्रमुख समस्या छल ओ आब दूर भेल अछि। नव-नव नाटककार सब नीक नाटक सब लिख रहल छैथ। पहिने जे टाइप्ड नाटक हरेक मंच पर होइत छल यथा-चंबल घाटी का लुटेरा,राजा भर्तहरि, शकुंतला, नागिन, सुल्ताना डाकू आदि आदि से समस्या खतम भ गेलैक अछि।मैथिली नाटक केर लोक पसिन्न करय लगलैक अछि। विभिन्न शहर जेना मधुबनी, दरभंगा,बेगुसराय, पटना आदि में विधिवत रंगमंचक व्यवस्था भेलैक अछि।कतेको संस्था रजिस्टर्ड छैक आ मैथिली नाटक विकासक डेग बढौलक या मुदा ग्रामीण रंगमंच पुरने ढर्रा पर चलि रहल अछि।खैर ढर्रा पुरान छैक ताहि लेल नै कोनो बात कारण गामक मंचक संस्कार अलग होइत छैक आ हेबको चाहि।गामक मंच सम्पूर्ण रूप सँ अव्यवसायिक होइत छैक ओना शहरो मे कमोबेश सैह स्थिति छैक मुदा ओहिठाम अपवाद सेहो छैक मुदा जँ ग्रामीण रंगमंच नै फलतै-फुलतै तहँ मैथिली नाटक के नीक दिन देखबाक सेहन्ता कोना पूरा हेतैक।अखैन आर्थिक युग चलि रहल अछि तैं रंगमंचक चिंतक लोकनि के अहि विषय पर चिंतन करबाक आवश्यकता छैक।शहर हो वा गाम घोड़ा घास सँ दोस्ती नै क सकैत अछि।जीविकोपार्जनक व्यवस्था कलाकार लोकनिक बड पैघ समस्या छैक जँ एकर निदानक स्थायी जोगाड़ लागि जाय त निःसंदेह मैथिली रंगमंचक दिशा बदैल जेतैक।कुल मिलाश्क इएह कहल जा सकैत अछि जे मैथिली रंगमंच आ नाटक के अखनो बहुतरास समस्याक सामना करबाक छैक खास क ग्रामीण रंगमंच के। अंत मे एतबे कहब जे जा धरि गामक पान के गुमती आ चाहक दुकान पर राजनीतिक चर्चाक जगह मैथिली नाटकक चर्चा नै हुए लागत ता धरि संघर्ष जारी राखय पड़त।



आशुतोष कुमार मिश्र
पूर्व सचिव, भंगिमा, पटना
गायक कलाकार,
आकाशवाणी, पटना
दूरदर्शन, पटना

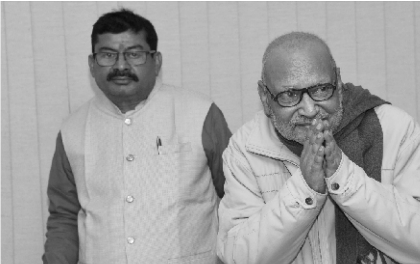
बटुक भाइ आ रंगमंच

छत्रानन्द सिंह झा के आकाशवाणी, पटना के चौपाल कार्यक्रम मे बटुक भाइ नाम छलन्हि आ एहि नाम सँ ओ समाजक बीच प्रचलित भेल।

बटुक भाइ आ हिनक व्यक्तित्वक परिचय हमरा वर्ष 1988 में भेल जखन हम भंगिया नाट्य संस्था में ओकरा आँगनक बारहमासा नाटक में नाट्य संगीत के लेल जुड़लहुँ। बटुक भाइ ओहि समय में भंगिमा के अध्यक्ष छलाह। हिनक व्यक्तित्व आ विचारक प्रति भंगिमा के समस्त सदस्य समर्पित रहैथि।

हिनक नेतृत्व में भंगिमा सदैव समाज के संग अपन सम्पर्क बनेने रहल। भंगिमा संस्था के नाट्य कला प्रदर्शन में कोनो प्रकारक रूकाबट नहि हो एहि लेल बटुक भाइ के भूमिका सशक्त रहैन।

ओ भंगिया के अध्यक्ष रहथि वा नहि लेकिन समाजक नजरि में भंगिया के नाम जखन अबैत छल त बटुक भाइ के चर्चा निश्चित रूप सँ होइत छल। नाट्य कला के प्रति हिनक सोच आ समर्पण समाजक लेल गर्व के विषय थिक। हिनक गीत लेखन में साहित्यिक शब्दक संस्कार झलकैत अछि आ हिनक रचित नाट्यलेख में नाटकीयता झलकैत अछि जे भंगिमा द्वारा हिनक रचित अनेको नाट्य प्रदर्शन सँ परिलक्षित अछि।



कोनो व्यक्ति के चर्चा तखन होइत अछि जखन कयल गेल सामाजिक कार्य सँ समाजक बीच ओहि व्यक्ति के स्वीकार्यता हो। बटुक भाइ एकर उदाहरण छथि।

जखन भंगिमा के चर्चा होयत ओहि संगे बटुक भाइ के चर्चा होयब अवश्यम्भावी अछि कियाक त भंगिमा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखनिहार बटुक भाइ आ भंगिमा के अन्योन्याश्रय सम्बन्ध के समाजक लोक नीक जकाँ जानैत छलाह।

बटुक भाइ में अपनापन के भाव बहुत छलैन्ह आ कोनो नब साहित्यकार/गीतकार/गायक कलाकार आ नाट्य कलाकार जकरा में ओ बुझथिन जे एहि कलाकार में प्रतिभा छै आ आगा बढ़ि सकैत अछि तकरा ओ आगा बढ़ाबय में अपन योगदान जबरदस्त रूप सँ दैत रहथिन।

मिथिला समाज के सांस्कृतिक/साहित्यक आ नाट्यकला के विकास के लेल हिनक योगदान के बिसरायब असम्भव बुझना जाइत अछि।

हिनका हम शत-शत नमन करैत छी आ ईश्वर सँ प्रार्थना करैत छी जे हिनका एहन व्यक्तित्व के निर्माण कयल जाय जाहि सँ मिथिला समाजक साहित्यिक/सांस्कृतिक/नाट्य विकास के क्षतिपूर्ति भ' सकय।



बैजू झा

अभिनेता, भंगिमा



शिक्षामे रंगकर्मक महत्व

सामान्यतः ई देखल जायत अछि जे लोक नाटक या रंगकर्मक उपेक्षा करैत छथि। किएक त ओ ई मानैत छथिन जे ई बच्चाकेँ जीवनमे मात्र सौख छियैक। यद्यपि ई बात छैक नहि। नाटक बच्चाकेँ शिक्षा आ विकासमे बड्ड बेसी महत्वपूर्ण छैक।

नाटक बच्चाकेँ (या अन्यचकेँ) अपन आत्मविश्वास विकसित करबाक अवसर दैत अछि। एकर अतिरिक्त रंगकर्म या नाटक बच्चाकेँ अपन आराम क्षेत्र (कंफर्ट जोन) सँ बाहर निकैलके काज करबाक चुनौती दैत अछि। आ से जखन ओ अपन काजकेँ दर्शकक सोझाँ प्रस्तुत करैत छथि त ओ आत्मविश्वास और बेसी बढ़ि जायत अछि।

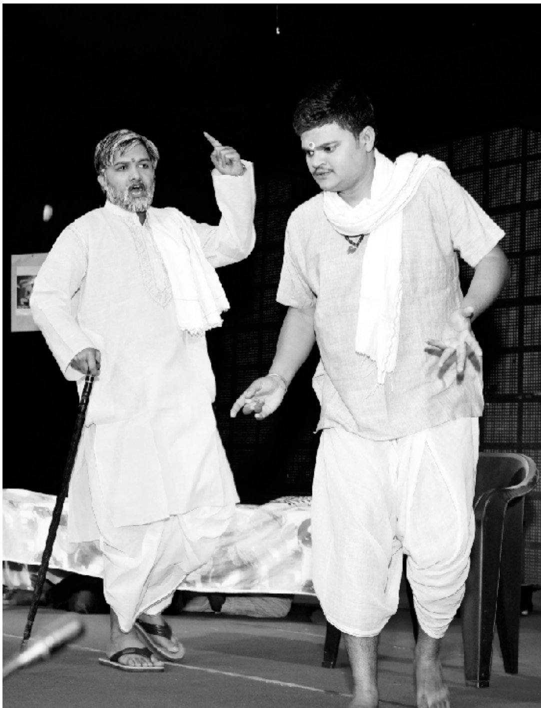
शिक्षामे रंगकर्मक महत्व अहु दुआरे छैक किएक त रंगकर्मसँ आत्मविश्वासे टा नहि अपितु संचार कौशल (कम्युनिकेशन स्किल) सेहो बढ़ैत छैक। आ जखन बच्चेसँ लोकमे ई गुण विकसित भ जाय त कमाल भ जेतैक। कम उम्रमे टीमक खिलाड़ी बनबाक ई गुण युवावस्थामे और बेसी बढ़तै। जाहि सँ बच्चाकेँ अन्य लोकक संग गपशप करबाक क्षमता सुनिश्चित हेतैक।

एकर अतिरिक्त रंगकर्म भावपर सेहो मजबूत पकड़ प्रदान करैत अछि। बच्चासब सीख कऽ अथवा अभ्यास कऽ कऽ भावपर नियंत्र्ण केनाय सीख जायत अछि। तामस, खुशी, उदासी अथवा एना कही जे अभिनयक सब रसक समझ हुनकामे विकसित होयत चलि जायत अछि। जाहिसँ समयसँ पूर्वहि हुनकामे परिपक्वता (मैच्योरिटी) आबि जायत अछि।

नाटक अथवा रंगकर्मक माध्यमसँ बच्चासब दुनियाक बारेमे नव ढंगसँ सीख सकैत अछि। रंगकर्म अपना आपके स्वतंत्र रूपसँ व्यक्त करबाक मौका त दैते अछि, संगहि विभिन्न प्रकारक समस्या सोझरेबाक क्षमता सेहो विकसित करैत अछि।

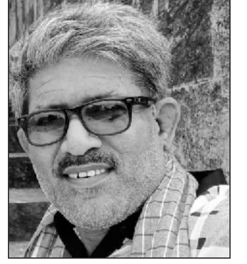
रंगकर्मसँ आन-आन तरहक सेहो बहुत रास फायदा सब छैक। एहि लेल अपना जीवनमे किछु दिन रंगकर्मसँ निश्चिते जुड़बाक चाही।





नाटक ''ले बलैया' मे बैजू झा आ रंजन ठाकुर

कलेन्द्र झा 'कमल'
कवि/गीतकार



परमादरणीय बटुक भाइक आर्त स्मृति मे...

बुलबुल्ला-सन जिंदगी; क्षणभंगुर परिणाम।
माटिक अछि संसार ई; एक सत्य हरिनाम।।

सुगवा ऊड़ल डारि सँ; ठूँठ पड़ल सब गाछ;
पानि पटोटनि दय रहल; कतय गेल यौ माछ।।

सत्य-शील-संवेदना; परोपकार अनुरूप।
अइ सबसँ निर्माण भेल; 'बटुक भाइ' केर रूप।।

मृदुवाणी, विनयी वदन; विनयमूर्ति आमूल।
सकल परिस्थिति प्रेममय; केहनो हो प्रतिकूल।।

चारू भर पसरल खुशी; सुनिते देरी हाल।
नमस्कार सब लोक कें; शुरू भेल 'चौपाल'।।

'मुखिया जी' की हाल अइ; कहियौ 'खुरखुर भाइ'।
सूनि रहल चौपाल छथिय अखनो मैयाँ दाइ।।

समाचार सब ठीक अइ; गाम-घ'र-परिवार।
पैने नै छै भ' रहल; करतै की सरकार।।

बरसाती छिक्का शुरू; भेल उकासी आब।।
कड़हा पीबू मोन सँ; सब श्रीमान-जनाब।।

आब न 'मुखिया जी' कतउ; कतउ न 'खुरखुर भाइ'।
'बटुक भाइ' बिन सुन्न अइ; 'चौपाल'क 'श्री' आइ।।

कतउ रहू छी मोन मे; बनि 'डोकहरक आँखि'।
'सुनू जानकी' सँ जुड़ल; क्रांतिधरा केर पाँखि।।

स्वयं छी 'नट सम्राट' यौ; संगे-संग 'कबीर'।
रंगकर्म केर पारखी; अभिनय केर अबीर।।

फुटबॉलक प्रेमी अहाँ; साहित्यक अवदान।
छलहुँ सकल संसार लेल; सद्यः एक वरदान।।

एक स बढ़िक' एक कृति; कहि पाओत की बोल।
'भंगिमा'क संस्थापना, अछि कृतित्व अनमोल।।

लाइट फेड अछि नाटकक; पूरा मंच अन्हार।
कठपुतली सँ टूटि गेल; आँगुरवाला तार।।

शुरू करू 'चौपाल' फेर; हँस्सी केर दबाइ।
'अंतिम प्रश्न' करैत छी; कत' छी 'बट्टुक भाइ'।।

रंगकर्म केर रंग मे; साहित्यहु मे नाम।
सदा बिराजू मोन मे; शत-शत कोटि प्रणाम।।



छत्रानन्द सिंह झा 'बटुक भाइ' कें स्मृतिमे

प्रथम भंगिमा रत्न सम्मान-2023



उमाकान्त झा

''मैथिली रंगमंचक बेताज बादशाह - अभिनयक शहंशाह''

संक्षिप्त रंग परिचय

- जन्म :1 अप्रैल 1951
- नाट्य संस्था भंगिमा, पटनाक संस्थापक सदस्य आ पूर्व अध्यक्ष।
- लगभग 40 वर्षक मैथिली रंगमंचक अपन यात्रा मे लगभग डेढ़ सए सँ बेसी छोट-पैघ नाटकक करीब बारह सए प्रदर्शन मे सहभागी।
- महेन्द्र मलंगिया लिखित चर्चित नाटक 'काठक लोक' कें पात्र 'बाबा' के जीवंत किरदार सँ समाज मे 'बाबा' उपनाम सँ चर्चित।
- अरण्य कथा, मैं मंत्री बनूंगा, संयोग, बड़े आदमी, न्यायप्रिय, अर्थदोष, साला मैं तो साहब बन गया आदि (हिन्दी) आ ओकरा आङगनक बारहमासा, अन्तिम प्रणाम, समय संकेत, रामलीला, काठक लोक, रुक्मिणी हरण, गोनू झा, नट सम्राट, कुसमा सलहेस, पारिजात हरण, धूर्तसमागम, देसिल बयना, लोरिकायन आदि (मैथिली) मे यादगार अभिनय।
- गाछ, रामलीला, आदर्श कुटुम्ब, भामती, बकलेल, राज्याभिषेक, अद्भुत संयोग, कोइली बिन बगिया उदास आदि नाटकक निर्देशन।
- आकाशवाणी, पटना, दूरदर्शन, पटना, ई. टीभी बिहार एवं अन्य लेल अभिनेताक रूपमे अविस्मरणीय कार्य।
- चेतना समिति, अरिपन, भंगिमा के लेल निरंतर अनेक नाटक मे अभिनय, निर्देशन, रूप-सज्जा आदि।
- अनेक नाटकक अनेक देशी-विदेशी प्रदर्शन मे अभिनयक लेल श्रेष्ठताक अनेक पुरस्कार सम्मान सँ विभूषित।
- **विशिष्ट सम्मान :-**
  कलाश्री सम्मान
  शैलबाला पुरस्कार, चेतना समिति सम्मान
  ज्योतिरीश्वर रंग शीर्ष सम्मान - 2017

सम्पर्क : 402, निरंजन स्वामी एपार्टमेन्ट
मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डेन रोड, पटना-800014



कुमार गगन कें स्मृतिमे

प्रथम भंगिमा भूषण सम्मान-2023



प्रियंका कुमारी

''लक्ष्य सँ प्रेम हो, तँ दिक्कत फुर्र!''

संक्षिप्त रंग परिचय

- ❒ जन्म : 07 जनवरी, 1991
- ❒ भंगिमा सँ रंगमंचक शुरुआत।
- ❒ आकाशवाणी, पटनाक ''बी'' ग्रेड नाटक कलाकार।
- ❒ बाल्यकालहिसँ पटनाक मैथिली रंगमंचमे सक्रिय।
- ❒ अद्यावधि लगभग दू दर्जन नाटकक अनेक प्रदर्शनमे सहभागिता तथा अनेक शहर आ गामक रंग-यात्रा।
- ❒ टीवी सीरियल आ फिल्ममे सेहो अभिनय।
- ❒ पटना विश्वविद्यालयसँ 2021 मे एम.ए. (मैथिली)।
- ❒ नेट/जे.आर.एफ. मैथिली सँ उत्तीर्ण।
- ❒ वर्तमानमे मैथिली भाषा सँ पीएचडी के शोधार्थी (एलएनएमयू, दरभंगा)।
- ❒ मैथिली पठन-पाठनमे सक्रिय।
- ❒ भंगिमा, चेतना समिति, अरिपन, इप्टा, अक्षरा आर्ट्स आदि संस्थाक संग लगातार अभिनय सक्रियता।

सम्पर्क : 202-ए, सीताकुंज अपार्टमेन्ट,
वेद नगर, बेली रोड, रुकनपुरा, पटना : 800014
मो. : 72093 90393,
ई मेल : priyankarukanpura@gmail-com

भंगिमाक आइ धरिक मंचन क्रम

''भंगिमा''क उनचालीसम वर्ष भ' रहल अछि, एहि अवधिमे प्रस्तुत नाटकक सूची

क्रम	नाटक	नाटककार	निर्देशक	स्थान
1.	ओकरा आँगनक बारहमासा (21.09.84)	श्री महेन्द्र मलंगिया	श्री कुणाल	भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना
2.	प्रायश्चित (26.11.84)	श्री छत्रानन्द सिंह झा	श्री विनोद कुमार झा	मिलर स्कूल प्रांगण, पटना
3.	एक दिन (29.04.85)	मूल-प्रताप नारायण मिश्र अनु-श्री विनोद कुमार मिश्र	श्री कुणाल	रवीन्द्र भवन, पटना
4.	पृथ्वीपुत्र (10.06.85)	उप-ललित रूपा-श्री अशोक	के. अजय	भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना
5.	समय संकेत (04.08.85)	श्री विभूति आनन्द	श्री कुणाल	भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना
6.	एक छल राजा (05.08.85)	श्री नचिकेता	श्री छत्रानन्द सिंह झा	भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना
7.	सीताहरण (11.10.85)	श्री छत्रानन्द सिंह झा	श्रीमती नीलम चौधरी	भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना
8.	जॉब भैकेंसी (11.10.85)	मूल-समुदाय, कर्नाटक रूपा-श्री विभूति आनन्द	श्री कुणाल	भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना
9.	गाछ (11.10.85)	मूल-श्री लाभ शंकर ठक्कर अनु-श्री छत्रानन्द सिंह झा	श्री उमाकान्त झा	भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना
10.	जॉब भैकेंसी (28.12.85)	मूल-समुदाय, कर्नाटक रूपा-श्री विभूति आनन्द	श्री कुणाल	रवीन्द्र भवन, जमशेदपुर
11.	समय-संकेत (28.12.85)	श्री विभूति आनन्द	श्री कुणाल	रवीन्द्र भवन, जमशेदपुर
12.	एसगर-एसगर (06.04.86)	कथा-श्री विभूति आनन्द रूपा-श्रीमती ज्योत्स्ना चन्द्रम्	काजल	भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना
13.	काठक लोक (04-05.08.86)	श्री महेन्द्र मलंगिया	श्री कुणाल	भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना
14.	जॉब भैकेंसी (11.09.86)	मूल-समुदाय, कर्नाटक रूपा-श्री विभूति आनन्द	श्री कुणाल	रवीन्द्र भवन, पटना
15.	जॉब भैकेंसी (30.10.86)	मूल-समुदाय, कर्नाटक रूपा-श्री विभूति आनन्द	श्री कुणाल	अयाची शंकर संस्थान सरिसब पाही, मधुबनी
16.	छींक (31.12.86)	हरिश्चन्द्र झा 'हरीश'	श्री मनोज कुमार पाठक	विद्यापति भवन, पटना
17.	संयोग (31.12.86)	मूल-सतीश डे अनु.-श्री किशोर केशव	आशनारायण मिश्र	विद्यापति भवन, पटना
18.	लगक दूरी (29-30.04.87)	सुधांशु 'शेखर' चौधरी	श्री किशोर कुमार झा	कालिदास रंगालय, पटना
19.	मर्यादाक भंग (07.05.87)	कथा-प्रो. हरिमोहन झा रूपा.-श्रीमती उषाकिरण खान	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना (मैथिली महिला संघक लेल)
20.	एक कमल नोरमे (04-05.08.87)	श्री महेन्द्र मलंगिया	श्री किशोर कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
21.	समय संकेत (11.10.87)	श्री विभूति आनन्द	श्री कुणाल	भारतीय नृत्य कला मंदिर, पटना
22.	मैथिली फिल्म (31.12.87)	ललन प्रसाद ठाकुर	श्री श्रीनारायण झा	विद्यापति भवन, पटना

23. ले बलैया (31.12.87)	मूल-अनिल कुमार मुखर्जी अनु.-श्री किशोर केशव	कुमार शैलेन्द्र	विद्यापति भवन, पटना
24. उमाकांत-1 (17.02.88)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
25. साँझक गाछ (17.02.88)	राजकमल चौधरी	श्री मनोज कुमार पाठक	विद्यापति भवन, पटना
26. गाछ लगाउ (17.02.88)	कविता-नागार्जुन रूपा.-श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
27. ओकरा आँगनक बारहमासा (06.04.88)	श्री महेन्द्र मलंगिया	श्री कुणाल	रवीन्द्र भवन, पटना
28. रामलीला (4-5 अगस्त 88) तथा 4-5 अक्टूबर, 88)	मूल-श्री राकेश अनु.-श्री छत्रानन्द सिंह झा	श्री उमाकान्त झा	विद्यापति भवन, पटना
29. मैथिली फिल्म (31.12.88)	ललन प्रसाद ठाकुर	श्री श्रीनारायण झा	विद्यापति भवन, पटना
30. फाँस (31.12.88)	मूल-श्री शैलेश गुह नियोगी अनु.-रामलोचन ठाकुर	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
31. बुलबुल आ रखबार (29.04.89)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
32. हँ मे हँ (29.04.89)	मूल-मिश्र बन्धु अनु.-श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
33. जाड़, जिनगी आ जहल (29.04.89)	मूल-सर्वेश्वर दयाल सक्सेना अनु.-श्री किशोर केशव	श्री किशोर कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
34. काठक लोक (04-05.08.89)	श्री महेन्द्र मलंगिया	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
35. पाँच पत्र (02.09.89)	प्रो. हरिमोहन झा	श्री मनोज कुमार पाठक	विद्यापति भवन, पटना
36. उपनयनक भोज (31.12.89)	प्रो. तंत्रनाथ झा	श्री भवनाथ झा	विद्यापति भवन, पटना
37. नाटक़नाटक-नाटक=नाटक (31.12.89)	मूल-श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा अनु.-श्री किशोर केशव	श्री किशोर कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
38. कुत्ता (26.01.90)	कथा-श्री श्रीकांत रूपा.-श्री किशोर केशव	श्री किशोर कुमार झा	पत्रकार नगर, कंकड़बाग, पटना
39. उपनयनक भोज (02.02.90)	प्रो. तंत्रनाथ झा	श्री भवनाथ झा	विद्यापति भवन, पटना चेतना समिति द्वारा प्रायोजित
40. हथटुट्टा कुर्सी (29.04.90)	सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी	श्री भवनाथ झा	विद्यापति भवन, पटना
41. रुक्मिणी हरण (04-05.08.90)	श्री गोविन्द झा	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
42. आदर्श कुटुम्ब (18.11.90)	कथा-प्रो. हरिमोहन झा रूपा.-श्री छत्रानन्द सिंह झा	श्री उमाकान्त झा	विद्यापति भवन, पटना चेतना समिति द्वारा प्रायोजित
43. मैथिली फिल्म (20.11.90)	ललन प्रसाद ठाकुर	श्री श्रीनारायण झा	पटना पुस्तक मेला, पटना
44. पंडितक गप्प (31.12.90)	प्रो. हरिमोहन झा	प्रमिला झा	विद्यापति भवन, पटना
45. भुसकौलवला (31.12.90)	श्रीमती उषाकिरण खान	श्रीमती तनुजा शंकर	विद्यापति भवन, पटना
46. रुक्मिणी हरण (23.01.91)	श्री गोविन्द झा	श्री कुणाल	रथीन्द्र मंच, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता
47. रुक्मिणी हरण (25.01.91)	श्री गोविन्द झा	श्री कुणाल	शिशिर मंच, कोलकाता

48.	नट सम्राट (29-30.04.91)	मूल-बी.वी. शिरवाडकर अनु-श्री छत्रानन्द सिंह झा	कुमार शैलेन्द्र	विद्यापति भवन, पटना
49.	अर्राइत गाछ (04-05.08.91)	श्री केवल कृष्ण	श्री मनोज कुमार पाठक	विद्यापति भवन, पटना
50.	भामती (07.10.91)	श्री सुशील झा	श्री उमाकान्त झा	विद्यापति भवन, पटना
51.	छींक (31.12.91)	हरिश्चन्द्र झा 'हरीश'	केशव नन्दन	विद्यापति भवन, पटना
52.	मिथिलाक संस्कृति (31.12.91)	प्रो. हरिमोहन झा	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
53.	ले बलैया (31.12.91)	मूल-अनिल कुमार मुखर्जी अनु.-श्री किशोर केशव	कुमार गगन	विद्यापति भवन, पटना
54.	रुक्मिणी हरण (12.01.92)	श्री गोविन्द झा	श्री कुणाल	कालिदास रंगालय, पटना
55.	ले बलैया (20.01.92)	मूल-अनिल कुमार मुखर्जी अनु.-श्री किशोर केशव	कुमार गगन	कालिदास रंगालय, पटना
56.	ले बलैया (06.02.92)	मूल-अनिल कुमार मुखर्जी अनु.-श्री किशोर केशव	कुमार गगन	बेलौंचा, मधुबनी
57.	रुक्मिणी हरण (12.04.92)	श्री गोविन्द झा	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
58.	रुक्मिणी हरण (29.04.92)	श्री गोविन्द झा	श्री कुणाल	महेन्द्र सभागार, विराट नगर
59.	उदास गाछक बसंत (04-05.08.92)	श्री उदयचंद्र झा 'विनोद'	श्री ब्रह्मानन्द झा	विद्यापति भवन, पटना
60.	रुक्मिणी हरण (17.10.92)	श्री गोविन्द झा	श्री कुणाल	रेलवे स्टेडियम, धनबाद
61.	पंडितक गप्प (31.12.92)	प्रो. हरिमोहन झा	प्रमिला झा	विद्यापति भवन, पटना
62.	संयोग (31.12.92)	मूल-श्री सतीश डे अनु.-श्री छत्रानन्द सिंह झा	आशनारायण मिश्र	विद्यापति भवन, पटना
63.	भामती (28-29.04.93)	श्री सुशील झा	श्री उमाकान्त झा	विद्यापति भवन, पटना
64.	चालीस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा (04-05.08.93)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
65.	मोर मन मोर मन नै पतिआइए (31.12.93)	कुमार शैलेन्द्र	श्री किशोर कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
66.	चौपट राजा (31.12.93)	मूल-विजय तेन्दुलकर अनु-प्रमिला झा	प्रमिला झा	विद्यापति भवन, पटना
67.	चैम्बर शो (उमाकांत-1, हँ मे हँ, गाछ लगाउ, जॉब भैकेंसी)		श्री कुणाल	
	(15.02.94)	इन्द्रपुरी, पटना		
	(14.03.94)	आनन्दपुरी, पटना		
	(15.03.94)	वाचस्पति नगर, पटना		
	(16.03.94)	राजीव नगर, पटना		
	(17.03.94)	शास्त्री नगर, पटना		
68.	चालीस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा (30.04.94 तथा 01.05.94)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	कालिदास रंगालय, पटना
69.	पहिल साँझ (04-05.08.94)	सुधांशु 'शेखर' चौधरी	श्री भवनाथ झा	विद्यापति भवन, पटना

70. खड़िया खेल (31.12.94)	श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर	श्री किशोर कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
71. घटकक पराभव (31.12.94)	प्रो. तंत्रनाथ झा	प्रमिला झा	विद्यापति भवन, पटना
72. मैथिली फिल्म (30.04.95)	ललन प्रसाद ठाकुर	प्रमिला झा	अयाची अपार्टमेंट, आनन्दपुरी, पटना
73. सीतायन उर्फ मिथिलाक बेटी (04-05.08.95)	मूल-श्री सोमदेव प्र.आ.-श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
74. रुक्मिणी हरण (09.12.95)	श्री गोविन्द झा	श्री कुणाल	नगर भवन, मधुबनी
75. मिले धोंछ मे धोंछ (31.12.95)	मूल-श्री अनिल सोनार अनु.-श्री छत्रानन्द सिंह झा	प्रमिला झा	विद्यापति भवन, पटना
76. अपन हारल (31.12.95)	मूल-मोलियर अनु.-श्री किशोर केशव	श्री संजीव तमन्ना	विद्यापति भवन, पटना
77. सीतायन उर्फ मिथिलाक बेटी (04-05.08.96)	मूल-श्री सोमदेव प्र.आ.-श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
78. रुक्मिणी हरण (16.09.96)	श्री गोविन्द झा	श्री कुणाल	नगर भवन, मधुबनी
79. सीतायन उर्फ मिथिलाक बेटी (17.09.96)	मूल-श्री सोमदेव प्र.आ.-श्री कुणाल	श्री कुणाल	नगर भवन, मधुबनी
80. मुद्रायज्ञ (31.12.96)	कुमार शैलेन्द्र	कुमार शैलेन्द्र	विद्यापति भवन, पटना
81. कुसमा सलहेस (29-30.04.97)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
82. रूपकथा उर्फ उमाकांत-2 (04.08.97)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
83. रुक्मिणी हरण (20.08.97)	श्री गोविन्द झा	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
84. चालीस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा (22.09.97)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	कन्या उच्च विद्यालय, सहरसा
85. काठक लोक (12.12.97)	श्री महेन्द्र मलंगिया	श्री कुणाल	राजर्षि मंडपम्, इलाहाबाद
86. काठक लोक (31.12.97)	श्री महेन्द्र मलंगिया	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
87. कुसमा सलहेस (26.06.98)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	रवीन्द्र मंडपम्, भुवनेश्वर
88. कुसमा सलहेस (04-05.08.98)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
89. आफत (31.12.98)	मूल-रमेश मेहता अनु.-श्री किशोर केशव	श्री संगम कुमार ठाकुर	विद्यापति भवन, पटना
90. ठकबा नगरिया (31.12.98)	मूल-सतीश डे अनु.-श्री किशोर केशव	श्री संगम कुमार ठाकुर	विद्यापति भवन, पटना
91. कुसमा सलहेस (19.01.99)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	कालिदास रंगालय, पटना
92. लोरिकायन (04-05.08.99)	कुमार शैलेन्द्र	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
93. मैक्सीवाली भौजी (31.12.99)	श्री रोहिणी रमण झा	श्री एल.आर.एम. राजन	विद्यापति भवन, पटना
94. हीरक जयंती (29.04.2000)	कथा-वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' रूपा.-श्री छत्रानन्द सिंह झा	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना

95. बकलेल (04-05.08.2000)	ललन प्रसाद ठाकुर	श्री उमाकान्त झा	विद्यापति भवन, पटना
96. बकलेल (28.10.2000)	ललन प्रसाद ठाकुर	श्री उमाकान्त झा	नवटोल, झंझारपुर
97. पंडित आ गरेड़िया (31.12.2000)	मूल-अज्ञात रूपा.-श्री भास्करानंद झा	श्री भास्करानंद झा	विद्यापति भवन, पटना
98. ई तँ कमाल भ' जायत (31.12.2000)	कुमार गगन	श्री उमाकांत झा	विद्यापति भवन, पटना
99. ई तँ कमाल भ' जायत (18.01.2001)	कुमार गगन	श्री उमाकांत झा	कालिदास रंगालय, पटना
100. देसिल बयना (04-05.08.2001)	कुमार शैलेन्द्र	श्री किशोर कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
101. हेबे करतै (31.12.2001)	श्री भास्करानंद झा	श्री भास्करानंद झा	विद्यापति भवन, पटना
102. इहो गाम अलबत्ते (31.12.2001)	कुमार गगन	कुमार गगन	विद्यापति भवन, पटना
103. इहो गाम अलबत्ते (20.01.2002)	कुमार गगन	कुमार गगन	कालिदास रंगालय, पटना
104. पंडित आ गरेड़िया (17.04.2002)	मूल-अज्ञात अनु.-श्री भास्करानंद झा	श्री भास्करानंद झा	कालिदास रंगालय, पटना
105. प्रायश्चित (20.04.2002)	श्री छत्रानन्द सिंह झा	श्री किशोर कुमार झा	कालिदास रंगालय, पटना
106. प्रायश्चित (30.04.2002)	श्री छत्रानन्द सिंह झा	श्री किशोर कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
107. प्रायश्चित (21.05.2002)	श्री छत्रानन्द सिंह झा	श्री किशोर कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
108. सुनू जानकी (04-05.08.2002)	श्री छत्रानन्द सिंह झा	श्री किशोर कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
109. एना भ' जाइ छै (31.12.2002)	श्री भास्करानंद झा	श्री भास्करानंद झा	विद्यापति भवन, पटना
110. अपन हाल (31.12.2002)	मूल-मोलियर अनु.-श्री किशोर केशव	श्री भास्करानंद झा	विद्यापति भवन, पटना
111. चाही एकटा शिवसिंह (04-05.08.2003)	श्री छत्रानंद सिंह झा	श्री किशोर कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
112. चौपट राजा (20.12.2003)	मूल-विजय तेन्दुलकर अनु.-प्रमिला झा	श्री किशोर कुमार झा	गेट पब्लिक लाईब्रेरी, पटना
113. मिले धोंछ मे धोंछ (31.12.2003)	मूल-अनिल सोनार अनु.-श्री छत्रानन्द सिंह झा	श्री भास्करानंद झा	विद्यापति भवन, पटना
114. चौपट राजा (31.12.2003)	मूल-विजय तेन्दुलकर अनु.-प्रमिला झा	श्री किशोर कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
115. पंडितक गप्प (31.12.2003)	कथा-हरिमोहन झा रूपा.-श्री अजित कुमार आजाद	श्री आशुतोष कुमार मिश्र	विद्यापति भवन, पटना
116. गठबन्धन (04-05.08.2004)	कुमार गगन	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
117. हमर इसकुल तोहर इसकुल (31.12.2004)	श्री गोविन्द झा	श्री आनन्द कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
118. हमर इसकुल तोहर इसकुल (19.01.2005)	श्री गोविन्द झा	श्री आनन्द कुमार झा	कालिदास रंगालय, पटना
119. प्रियंवदा (04-05.08.2005)	श्री नचिकेता	मनोज मनुज	विद्यापति भवन, पटना

120. किसुनदेव-विसुनदेव (31.12.2005)	मूल-(केनाराम-बेचाराम)-मनोज मित्र अनु.-रामलोचन ठाकुर	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
121. अन्हेर नगरी (31.12.2005)	मूल-भारतेन्दु अनु.-प्रबोध नारायण सिंह	श्री संजीव मिश्रा	विद्यापति भवन, पटना
122. पारिजात हरण (04-05.08.2006)	मूल-उमापति प्र.आ.-श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
123. पारिजात हरण (08.09.2006)	मूल-उमापति प्र.आ.-श्री कुणाल	श्री कुणाल	जुबली हॉल, बेगूसराय
124. पारिजात हरण (20.09.2006)	मूल-उमापति प्र.आ.-कुणाल	श्री कुणाल	श्रीराम सेन्टर, नई दिल्ली
125. पारिजात हरण (29.10.2006)	मूल-उमापति प्र.आ.-श्री कुणाल	श्री कुणाल	बाण थिएटर, तेजपुर, असम
126. पारिजात हरण (30.10.2006)	मूल-उमापति प्र.आ.- श्री कुणाल	श्री कुणाल	लाइब्रेरी हॉल, गुवाहाटी, असम
127. पारिजात हरण (29.12.2006)	मूल-उमापति प्र.आ.-श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
128. पमारा (30.12.2006)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
129. बाबाक संस्कार (30.12.2006)	कथा-हरिमोहन झा प्र.आ.-श्री कुणाल	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
130. चौधरी आ छकौड़ी (31.12.2006)	कुमार गगन	सुश्री स्वाति सिंह	विद्यापति भवन, पटना
131. प्रेमक रोग (31.12.2006)	प्रबोध नारायण सिंह	श्री आशुतोष कुमार मिश्र	विद्यापति भवन, पटना
132. पारिजात हरण (20.05.2007)	मूल-उमापति प्र.आ.-श्री कुणाल	श्री कुणाल	वाटसन स्कूल प्रांगण, मधुबनी
133. धूर्त समागम (04-05.08.2007)	मूल-ज्योतिरीश्वर प्र.आ.-डॉ. अरविन्द अक्कू	श्री संजीव मिश्रा	विद्यापति भवन, पटना
134. हथटुट्टा कुर्सी (04.11.2007)	सुधांशु 'शेखर' चौधरी	श्री किशोर कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
135. आब बुझलहक ने बाउ (31.12.2007)	मूल-मिशियो कातोह अनु.-कुमार गगन	सुश्री स्वाति सिंह	विद्यापति भवन, पटना
136. गोनूक गवाह (31.12.2007)	श्री महेन्द्र मलंगिया	कुमार गगन	विद्यापति भवन, पटना
137. सुनू जानकी (04-05.08.2008)	श्री छत्रानन्द सिंह झा	श्री किशोर कुमार झा	विद्यापति भवन, पटना
138. सिमरिया डूब (31.12.2008)	मूल-प्रो. तंत्रनाथ झा प्र.आ.-कुमार गगन	कुमार गगन	विद्यापति भवन, पटना
139. किसुनदेव-विसुनदेव (16.11.08)	मूल-(केनाराम बेचाराम)-मनोज मित्र अनु.-रामलोचन ठाकुर	श्री कुणाल	राजीव नगर, पटना
140. किसुनदेव-विसुनदेव (31.12.2008)	मूल-(केनाराम बेचाराम)-मनोज मित्र अनु.-रामलोचन ठाकुर	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
141. शपथग्रहण (04-05.08.2009)	कुमार गगन	कुमार गगन	विद्यापति भवन, पटना
142. बॉबी (31.12.2009)	मूल-विजय तेंदुलकर अनु.-कुमार गगन	श्री स्वर्णिम	विद्यापति भवन, पटना
143. फाँस (31.12.2009)	मूल-शैलेश गुह नियोगी अनु.-रामलोचन ठाकुर	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना
144. पाँच प्रश्न (04.08.2010)	कथा-श्री कुमार पवन नाट्यरूप-कुमार गगन	श्री कुणाल	विद्यापति भवन, पटना

145. केराक खोंइचा (31.12.2010)	श्री कुणाल	कुमार गगन	विद्यापति भवन, पटना
146. फूलवाली दाइ (31.12.2010)	श्री आशुतोष अभिज्ञ	श्री आशुतोष अभिज्ञ	विद्यापति भवन, पटना
147. खिस्साक खिस्सा उर्फ गोनू झा (17.12.2011)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	राजीव नगर, पटना
148. खिस्साक खिस्सा उर्फ गोनू झा (31.12.2011)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	भारती मंडन कक्ष विद्यापति भवन, पटना
149. काठक लोक (09.12.2012)	श्री महेन्द्र मलंगिया	श्री कुणाल	राजीव नगर, पटना
150. काठक लोक (31.12.2012)	श्री महेन्द्र मलंगिया	श्री कुणाल	कालिदास रंगालय, पटना
151. अद्‌भुत संयोग (05-06.08.2013)	कुमार गगन	श्री उमाकान्त झा	कालिदास रंगालय, पटना
152. अमंगल छाया (05-06.08.2013)	श्री निखिल रंजन	श्री निखिल रंजन	कालिदास रंगालय, पटना
153. खिस्साक खिस्सा उर्फ गोनू झा (31.12.2013)	श्री कुणाल	श्री कुणाल	कालिदास रंगालय, पटना
154. टटकाल दर्शन (14.12.2014)	श्री परमेश्वर कापड़ि	श्री कुणाल	युवा आवास प्रांगण, पटना
155. टटकाल दर्शन (20.12.2014)	श्री परमेश्वर कापड़ि	श्री कुणाल	गुवाहाटी, असम
156. टटकाल दर्शन (31.12.2014)	श्री परमेश्वर कापड़ि	श्री कुणाल	कालिदास रंगालय, पटना
157. लील्ला मे गील्ला काण्ड (31.12.2014)	श्री परमेश्वर कापड़ि	श्री कुणाल	कालिदास रंगालय, पटना
158. एखनो अबेर नहि भेल अछि (04.08.2015)	कुमार गगन	श्री उमाकान्त झा	कालिदास रंगालय, पटना
159. साँझक गाछ (04.08.2015)	कथा-राजकमल चौधरी एकल अभिनय-श्री आशुतोष अभिज्ञ	श्री कुणाल	कालिदास रंगालय, पटना
160. डर (04.08.2015)	कथा-श्री सुभाषचन्द्र यादव प्र. आ.-श्री कुणाल	श्री कुणाल	कालिदास रंगालय, पटना
161. फाँस (31.12.2015)	शैलेश गुह नियोगी अनु.-रामलोचन ठाकुर	श्री कुणाल	कालिदास रंगालय, पटना
162. पाथेय (05.08.2016)	गुणनाथ झा	श्री अवधेश झा	कालिदास रंगालय, पटना
163. मधुयामिनी (05.08.2016)	गुणनाथ झा	श्री संजीव पाण्डेय	कालिदास रंगालय, पटना
164. मुसरी झा (12.01.2017)	मूल कविता-प्रो. तंत्रनाथ झा एकल अभिनय-कुमार गगन	श्री कुणाल	मिथिला भवन, राजेन्द्र नगर, पटना
165. हथटुट्टा कुर्सी (02.02.2017)	सुधांशु 'शेखर' चौधरी	कुमार गगन	विद्यापति भवन, पटना
166. काठक लोक (16.08.2017)	श्री महेन्द्र मलंगिया	कुमार गगन	कालिदास रंगालय, पटना
167. काठक लोक (12.11.2017)	श्री महेन्द्र मलंगिया	कुमार गगन	मेघदूत परिसर, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली
168. गोनूक गवाह (31.12.2017)	श्री महेन्द्र मलंगिया प्र.आ. : कुमार गगन	कुमार गगन	कालिदास रंगालय, पटना
169. सिमरिया डूब (31.12.2017)	मू. कविता : तंत्रनाथ झा प्र. आ. : कुमार गगन	श्री निशांत झा	कालिदास रंगालय, पटना

170. काठक लोक (05.02.2018)	श्री महेन्द्र मलंगिया	कुमार गगन	पाटलिपुत्र नाट्य महोत्सव कालिदास रंगालय, पटना
171. काठक लोक (02.06.2018)	श्री महेन्द्र मलंगिया	कुमार गगन	भारतीय नृत्यकला मंदिर, पटना
172. काठक लोक (25.09.2018)	श्री महेन्द्र मलंगिया	कुमार गगन	कालिदास रंगालय, पटना
173. हमर इसकूल तोहर इसकूल (31.12.2018)	श्री गोविंद झा	श्री निखिल रंजन	कालिदास रंगालय, पटना
174. एहनो भ' सकैए (31.12.2018)	कुमार गगन	श्री उमाकान्त झा	कालिदास रंगालय, पटना
175. काठक लोक (07.03.2019)	श्री महेन्द्र मलंगिया	कुमार गगन	अन्तर्राष्ट्रीय नाटक महोत्सव जनकपुर
176. पावस ऋतु कैँ करिअ प्रणाम (05.08.2019)	कविता-यात्री प्र.आ.-कुमार गगन	श्री आशुतोष मिश्र	कालिदास रंगालय, पटना
177. छींक (20.12.2019)	हरिश्चन्द्र झा 'हरीश'	कुमार गगन	विद्यापति भवन, पटना
178. हँ मे हँ	मूल-मिश्र बंधु अनु. श्री कुणाल	श्री क्षमाकान्त ठाकुर	कालिदास रंगालय, पटना
179. छींक (31.12.2019)	हरिश्चन्द्र झा 'हरीश'	कुमार गगन	कालिदास रंगालय, पटना
180. शपथग्रहण (30.12.2021)	कुमार गगन	श्री किशोर केशव	विद्यापति भवन, पटना
(7.4.2022)			उद्योग वाणिज्य संघ, जनकपुर धाम, नेपाल
181. नदी गोंगिआएल जाय (31.12.2021)	कथा (अगुरबान)-धूमकेतु नाट्य रूपा.-मनोज मनुज	श्री रवीन्द्र बिहारी राजू	विद्यापति भवन, पटना
182. भारती (16.4.2022)	कथा-सुधांशु 'शेखर' चौधरी	श्री किशोर केशव	विद्यापति भवन, पटना
183. बुलबुल आ रखबार (14.5.2022)	श्री कुणाल	श्री निखिल रंजन	मुक्तधारा ऑडिटोरियम, नई दिल्ली
184. सुनू जानकी (6.8.2022)	छत्रानन्द सिंह झा	आदर्श वैभव	विद्यापति भवन, पटना
(7.8.2022)			प्रेमचन्द्र रंगशाला, पटना
(20.11.2022)			राजीव नगर, रोड नं.-14
185. डाकघर (बाल नाटक) (31.12.2022)	कथा-रवीन्द्रनाथ टैगोर अनु-सुमित ठाकुर	श्री सुमित ठाकुर	विद्यापति भवन, पटना
186. ले बलैया ('बिन दुल्हन की शादी' के मैथिली अनुवाद) (31.12.2022)	अनिल कुमार मुखर्जी अनु. श्री किशोर केशव	श्री किशोर केशव	विद्यापति भवन, पटना
187. मुक्ति (5.8.2023)	महेन्द्र मलंगिया आलेख-मुकेश झा	श्री अंतेश झा	विद्यापति भवन, पटना
(6.8.2023)			प्रेमचन्द रंगशाला, पटना



एहि बेरक प्रस्तुति...

5.8.2023 विद्यापति भवन, पटना

6.8.2023 प्रेमचंद रंगशाला, पटना

मुक्ति

नाटककार : महेन्द्र मलंगिया

प्रदर्शन आलेख : मुकेश झा

निर्देशक : अंतेश झा

कथासार

नाटक 'मुक्ति', एकटा असामान्य घटना के परिधि मे मानवीय संवेदनाक दू टा भिन्न चित्र प्रस्तुत करैत अछि। एक, जाहि मे मानवीय संवेदना निष्ठुर या मजबूर भ' क' एकटा घटना के जन्म दैत अछि आ दोसर, जाहि मे एकटा जिम्मेदार पद पर बैसल व्यक्ति कानून सँ ऊपर मानवीय संवेदना के तवज्जो दैत अपन फैसला सुनाबैत छथि।

ई नाटक एकटा कोर्ट रूम ड्रामा के माध्यम सँ समाज आ सरकार के विभिन्न तरहक समस्या या कमी के परिचय दैत अपन बात नाटकीय रूपें व्याख्या करैत अछि।

नाटक मे विभिन्न तरहक विमर्श ठाढ़ होइत अछि, गम्भीर प्रश्न उठैत अछि। शेष मंच पर...

निर्देशकक परिचय



जन्म : 12 सितम्बर 1986। शिक्षाः एम.बी.ए.। पैतृक गामः परैठा (मुजफ्फरपुर)। सम्पूर्ण रंगकर्मी। लगभग 22 साल सँ पटनाक मैथिली रंगमंच मे बतौर अभिनेता आ संगठन सहयोगीक रूप मे सक्रीय। एकघरिया, झिझिर कोना, अद्‌भुत संयोग, जय जनता जनार्दन, काठक लोक, शपथग्रहण, छींक, कोइली बिन बगिया उदास, सुनू जानकी आदि चर्चित नाटकक कइएक दर्जन नाट्य मंचन मे अभिनेताक रूप मे सहभागिता। मुक्ति नाटक के निर्देशन। वर्तमान मे नाट्य संस्था भंगिमाक सचिव।

निर्देशकीय

प्रसिद्ध नाटककार श्री महेन्द्र मलंगिया जी द्वारा लिखित रेडियो नाटक एवं श्री मुकेश झा'क मंचीय प्रदर्शन आलेखमे तैयार नाटक 'देह पर कोठी खसा दिय', जाहिमे आमूलचूल परिवर्तन करैत नव कलेवरमे नव नामक संग प्रस्तुत अछि नाटक ''मुक्ति''।

बिगत लगभग 20 वर्ष सँ पटना मैथिली रंगमंचमे एकटा अभिनेता एवं पार्श्व सहयोगी के रूप मे जुड़ल छी मुदा पहिल बेर निर्देशकक भुमिका मे छी।

माँजल कलाकार एवं सहयोगी सबहक कारणे बेसी मेहनत नय करऽ परल।

वर्तमानमे नॉन कामर्शियल थियेटर ग्रुप के लेल नाटक तैयार करनाय आसान नय छै। समान्यतः लगभग सब कलाकार आब कोनो-न-कोनो रोजगार, व्यवसाय, नौकरी आदि सँ जुड़ल छैथ, तैं हुनका लेल मास - दू मास रोज-रोज सब काज छोड़ि क' नाटक के पूर्वाभ्यासमे एनाय संभव व तर्कसंगत नय अछि। कारण हमसब कोनो पेमेंट त दैय नै छियै आवागमण भत्ता छोड़ि क'!

तैं हम सब पिछला दू बरख सँ नाटकक रिहर्सल सब शनि आ रवि क' केनाय शुरू केलियय। जाहि सँ कम सँ कम लोग के परेशानी हुए। अहू बेर हम सब इएह केलियय आ मिला जुला क कमोबेश सफलता सेहो भेट रहल अछि।

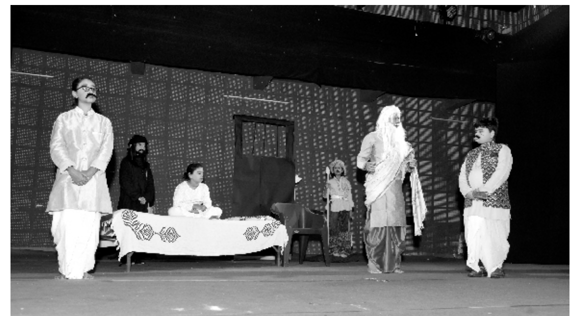
सब कलाकार संग देलक अछि आ सब तरह सँ।

नाटक अहाँ सब के नीक लागत से आशा अछि। धन्यवाद





कथा मंचन 'भारती' के एकटा दृश्य



बाल नाटक 'डाकघर' के एकटा दृश्य


आशा चौधरी


ज्योति प्रभा


केशव कुमार


आदर्श वैभव

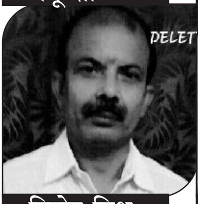

कमलेन्द्र झा 'कमल'


रंजन ठाकुर


बैजू झा


सोनू कुमार चौधरी


नितेश कुमार



विनोद मिश्र


अनिमेष कुमार सिंह


नवेन्दु कुमार झा


रोशन कुमार


बिकेश साह


सलोनी मल्लिक


क्षमाकान्त ठाकुर


संजय कुमार ठाकुर


संजीव झा


आशुतोष मिश्र 'आचार्य'

'' मैथिली कार्यक्रम मे लोक के कह' पड़ै छै, सुनलियैय काफी नै अछि मैथिली कार्यक्रम मे जेबाक लेल''

- बटुक भाइ

:: प्रस्तुति संदर्भ ::

मंच पर

माए - **आशा चौधरी**
युवती - **ज्योति प्रभा**
युवक - **केशव कुमार**
जज - **आदर्श वैभव**
ग्रामीण/पेशकार - **कमलेन्द्र झा 'कमल'**
ग्रामीण/वकील(1) - **रंजन ठाकुर**
ग्रामीण/वकील (2) - **बैजू झा**
दारोगा - **सोनू कुमार चौधरी**
सिपाही - **नितेश कुमार**
गवाह - **विनोद मिश्र**

नेपथ्यमे

प्रकाश परिकल्पना - **रोशन कुमार**
संगीत प्रभाव - **अनिमेष कुमार सिंह**
गायन/हारमोनियम - **आशुतोष मिश्र 'आचार्य'**
रूप सज्जा - **नितेश कुमार**
मंच परिकल्पना - **आदर्श वैभव**
पूर्वाभ्यास प्रभारी/मंच निर्माण - **रंजन ठाकुर**
बैनर/पोस्टर/प्रचार-प्रसार - **बैजू झा**
मीडिया प्रभारी - **नवेन्दु कुमार झा**
प्रस्तुति सहयोगी - **बिकेश साह, सलोनी मल्लिक, क्षमाकान्त ठाकुर**
काव्यांश/गीत - **कमलेन्द्र झा 'कमल'**

नाटककार - **महेन्द्र मलंगिया**
प्रदर्शन आलेख - **मुकेश झा**
परिकल्पना एवं निर्देशन - **अंतेश झा**

भंगिमा गान

लेखक - **कुमार गगन**
संगीत/गायन - **आशुतोष मिश्र 'आचार्य'**
तबला - **संजय कुमार ठाकुर**
उद्घोषक - **संजीव झा**

आभार

चेतना समिति, अरिपन, मिथिला संस्कृति एवं कला मंच(मिसकम), बिहार संगीत नाटक अकादेमी, सरस्वती प्रेस(काका कम्पोजर)

शुभकामनाक संग





'आवहनं न जानामि - न जानामि विसर्जनं'

मैथिली रंकगमंचक पत्रिका, अंक 58 कैँ अपन आलेख, संस्मरण, कविता, आदि सँ एकटा संग्रहणीय पत्रिका बनेबा लेल सब अतिथि लेखक कैँ धन्यवाद-आभार।

भोजक बेर मे कुम्हर रोपलहुँ हम, तैं किछ अशुद्धि रहि गेल हेतय, क्षमा करब। प्रकाशक, मुद्रक आ विज्ञापनदाता के अभिनन्दन!

-सम्पादक

स्थापित : 1984

निबंधन संख्या : 655/1986

Aranox

Creating Wealth I Creating future